पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

कार्तिक–मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5119, नवम्बर 2017

रोहिंग्या शरणार्थी नहीं घुसपैठिए हैं. . .

एसजेवीएन विश्व पटल पर

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- 412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- आरएचपीएस को "जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने" की श्रेणी में "**गोल्ड शील्ड**" तथा "**सिल्वर शील्ड**"।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए '**गोल्ड शील्ड**' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU

सीआईएन: L40101HP1988GOI008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

न हि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि:संदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धान्त:करण हुआ मनुष्य अपने आप ही आत्मा में पा लेता है।

वर्ष : 17 अंक : 11

मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5119, नवम्बर 2017

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

रोहिंग्या शरणार्थी नहीं घुसपैठिए हैं. . .

अब रोहिंग्या मुसलमान भी भारत में पर्याप्त संख्या में प्रवेश कर चुके हैं। जम्मू कश्मीर में पांच हजार से अधिक रोहिंग्या मुसलमान रह रहे हैं। राजधानी दिल्ली में कालिंदी कुंज पुल के निकट गैर सरकारी इनका नया ठौर बन चुका है। ओखला इलाके में इनके लिए गैर सरकारी मुस्लिम संस्था ने कैंप की व्यवस्था की है। इसके अतिरिक्त हैदराबाद और जयपुर के मुस्लिम बहुल इलाकों में हजारों रोहिंग्या रह रहे हैं। रोहिंग्या के प्रति भारत राष्ट्रीय सुरक्षा के कारणों से चिंतित है। इसका सबसे बड़ा कारण रोहिंग्या का अपना इतिहास है।

सम्पादकीय	रोहिंग्या शरणार्थी नहीं घुसपैठिए हैं	3
प्रेरक प्रसंग	तो चरित्रहीन कौन	4
चिंतन	साख बनाने के सहज नियम	5
आवरण	रोहिंग्या मुसलमानों का	6
संगठनम्	रा. स्वं. संघ के सरसंघचालक	10
देश प्रदेश	धर्म परिवर्तन के लिए मिला टारगेट	12
देवभूमि	500 परिवारों ने ली शपथ	14
पुण्य जंयती	गुरू नानक देव जी के प्रकाश	16
घूमती कलम	यूजर की जानकारी का	17
विविध	परिचर्चा	19
काव्य जगत	दृढ़ संकल्प से सिद्धि	21
कृषि	आर्गेनिक फार्मूले से	22
स्वास्थ्य	हरे पालक के अद्भुत	23
युवापथ	प्लेसमेंट पूर्व तैयारियां	24
महिला जगत	नारी अस्मिता व अस्तित्व	25
विश्वदर्शन	भारतीयों ने तैयार की ओस	26
समसामयिकी	100 बच्चों की पढ़ाई का	27
पुण्य स्मरण	नहीं रहे सबके 'वीर'	29
प्रतिक्रिया	किसानों से बीमा के नाम	30
बाल जगत	मेहनत के फल का महत्व	31

पाठकीय

महोदय,

देश के विकास के नाम पर कई लेख मातृवन्दना में पढ़ता हूं किन्तु मेरा मानना है कि देश आगे तो बढ़ रहा है लेकिन समस्याएं भी जटिल हो रही हैं। प्राकृतिक ढांचा मानवीय सुविधाओं की भेंट चढ़ रहा है। हम विकास को सही मायने में परिभाषित नहीं कर सके। सुख सुविधा संपन्न देशों को हम विकसित देशों की श्रेणी में गिनते हैं। हम भी विकास-विकास की रट लगाए हुए हैं। हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी निरंतर विदेशों के दौरों में व्यस्त हैं। प्रधानमंत्री की चिंताएं जायज हैं कारण कि भारत में गरीबी बढ़ रही है, बेरोजगारी बढ़ रही है, आबादी और बढ़ने के संकेत मिल रहे हैं। कानून व्यवस्था भी संतोषजनक नहीं है। पड़ोसी मुल्क हमारी नीतियों से प्रसन्न नहीं हैं। सरहदों पर तनाव के साथ-साथ देश विरोधी गतिविधियां बढ़ रही हैं। हमें निश्चिन्त नहीं होना चाहिए हमें अपनी-अपनी सरकारों का सहयोग करना चाहिए। जन सहयोग से ही सरकारें हमारी जरूरतें पूरी करने में सफल होगी। मनुष्य ईश्वर का अंश है पर मुकम्मल ईश्वर नही। हमारे सनातन धर्म में एक मान्यता है कि प्रजा पुत्र और राजा पिता समान है। आज प्रजा का राज्य है कोई राजा नहीं न कोई रानी। आज यदि कुछ सर्वोपरि है तो केवल राष्ट्र और राष्ट्रीय धर्म। राष्ट्रीय उन्नति के लिए जरूरी है चरित्र निर्माण, देश भक्ति, मातृभूमि की रक्षा, मानवता का सम्मान, शांति, सर्वधर्म सौहार्द, भाईचारा, सहयोग। अंहिसा परमोधर्म: लेकिन मानवता राष्ट्रहित और धर्म हित के संवर्धन में शस्त्र युद्ध वर्जित नहीं है। अधर्म के विरूद्ध उठ खड़े होना इसका विरोध करना राष्ट्र हित में है। ❖ **के.सी.शर्मा गगलवी, कांगड़ा, हि.प्र.**

महोदय,

विगत अंक में प्रो0 चिन्तामणि मालवीय का लेख पढ़ा जिसमें समरस समाज की बात की गई। किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो आज एक तरफ जातिवाद, धर्मवाद के नाम पर आरक्षण की आग लगी हुई है तो दूसरी ओर देश का शिक्षित युवा वर्ग रोजगार पाने के लिए दर-दर की ठोकरें खाता है। देश, समाज और जन सेवा करने के लिए उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती है, मिलती भी है तो वेतन इतना कम होता है कि उससे उसका अपना ही खर्च पूरा नहीं होता। स्वरोजगार आरम्भ करने हेतु उसके पास आवश्यकता अनुसार धन नहीं होता है, वह करे भी तो क्या करे? वैदिक वर्णव्यवस्था में छूआछूत था ही नहीं, गुणों के आधार पर कार्य विभाजन था। वैदिक वर्ण व्यवस्था की यह बात सर्वविदित है कि गुण, संस्कार और स्वभाव के अनुसार ब्रह्मभाव में स्थिर रहकर ब्रह्मतत्व का विश्व कल्याण हेतु प्रचार-प्रसार करने वाला पुरूषार्थी, ब्रह्मज्ञानी, ज्ञानवीर होता है तो क्षत्रिय भाव में स्थिर रहकर जन, समाज और राष्ट्रहित में रक्षा-सुरक्षा-कार्य करने वाला पुरूषार्थी, शूरवीर। इसी प्रकार वैश्यभाव में स्थिर रहकर जन, समाज और राष्ट्र हित में गौसेवा, कृषि-बागवानी और व्यापार संबंधी कार्य करने वाला पुरूषार्थी, धर्मवीर होता है तो सेवा चाकरी आदि कार्य करने वाला पुरूषार्थी, कर्मवीर। ऐसा जानते हुए भी हम अपनी पुरातन समर्थ और सक्षम वर्ण व्यवस्था को महत्व नहीं देते हैं। उसे हमने जातिवाद और अस्पृश्यता की ढाल लेकर आरक्षण का बाना पहना दिया है। अगर कोई जन, समाज या संगठन जन हित, समाज हित और राष्ट्र हित में सकारात्मक आवाज उठाता है, रचनात्मक कार्य करता है और लोग उसका साथ देते हैं तो इसमें बुरा भी क्या है? इस प्रयास से दूसरों को प्रेरणा तो मिल ही सकती है। ❖ **चेतन कौशल ''नूरपूरी'' कांगड़ा, हि.प्र.**

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com
आप हमें व्हॉट्सएप, फेसबुक, टिव्टर व यू-ट्यूब पर भी संपर्क कर सकते हैं।

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री गुरूनानक देव जयंती एवं श्री गीता जयंती उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (नवम्बर)

पहाड़ी दिवस	01 नवम्बर
श्री गुरूनानक देव जयंती	04 नवम्बर
उत्पन्ना एकादशी	14 नवम्बर
बाल दिवस	14 नवम्बर
श्रीराम जानकी विवाहोत्सव	23 नवम्बर
श्री गुरूतेगबहादुर शहीदी दिसव	24 नवम्बर
मोक्षदा एकादशी	30 नवम्बर
श्री गीता जयंती	30 नवम्बर

रोहिंग्या शरणार्थी नहीं घुसपैठिए हैं।

जीवन मूल्यों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था एवं मानवीय संवेदना को सर्वोपरि माना गया है। इसीलिए जब भी विश्व के किसी कोने में अमानवीय प्रवृत्ति से उजागर घटनाएं घटित होती हैं तो पूरे विश्व में हलचल मच जाती है। भारत के पड़ोसी देशों में जब भी विभिन्न समुदायों में विद्रोह हुए तो वहां से आये शरणार्थियों को मानवीय आधार पर भारत में पनाह दी गई। पूर्व में बंगलादेश, श्रीलंका, तिब्बत म्यांमार और अफगानिस्तान से आये शरणार्थी एक लम्बे अरसे से भारत में रह रहे हैं। बकायदा इनकी सुरक्षा एवं भरण-पोषण तथा आवास की व्यवस्था की गई है। उनमें से अधिकांश को सीमित नागरिकता भी हासिल हो चुकी है। पांच दशक पहले बांग्लादेश चकमा और हजोंग भारत में आकर बसे उन्हें भी अब सीमित नागरिकता मिलने जा रही है। इसी प्रकार तिब्बतियों को भी बसाया गया है। मानवीय आधार पर भारत ने करोड़ो शरणार्थियों की रक्षा का दायित्व अब तक उठाया हुआ है। दुर्भाग्य यह है कि बंग्लादेश आदि से अवैध रूप से भारत में प्रवेश कर चुके असंख्य बंग्लादेशियों ने पूर्वोत्तर राज्यों में अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है, जनसंख्या का दबाव बढ़ चुका है। पूर्वोत्तर राज्यों के अधिकांश जिले मुस्लिम बहुल हो चुके हैं।

अब रोहिंग्या मुसलमान भी भारत में पर्याप्त संख्या में प्रवेश कर चुके हैं। जम्मू कश्मीर में पांच हजार से अधिक रोहिंग्या मुसलमान रह रहे हैं। राजधानी दिल्ली में कालिंदी कुंज पुल के निकट गैर सरकारी इनका नया ठौर बन चुका है। ओखला इलाके में इनके लिए गैर सरकारी मुस्लिम संस्था ने कैंप की व्यवस्था की है। इसके अतिरिक्त हैदराबाद और जयपुर के मुस्लिम बहुल इलाकों में हजारों रोहिंग्या रह रहे हैं। रोहिंग्या के प्रति भारत राष्ट्रीय सुरक्षा के कारणों से चिंतित है। इसका सबसे बड़ा कारण रोहिंग्या का अपना इतिहास है। यह समुदाय आतंकवादी संगठन से जुड़ा है। 'अराकान रोहिंग्या सेलवेशन आर्मी' संगठन का नाम है। इनके निशाने पर बौद्ध हिन्दु दोनों हैं। इसलिए भारत सरकार इनको पनाह देने में हिचकिचा रही है। वास्तव में इन्हें पनाह देना सुरक्षा की दृष्टि से घातक सिद्ध हो सकता है। जहां तक मानवाधिकार की बात है तो भारत सरकार ने बांग्लादेश में रोहिंग्या शरणार्थियों को सहायता प्रदान करने के लिए 'आप्रेशन इनसानियत' की शुरूआत की है, इस माध्यम से सरकार अपने बजट का बड़ा हिस्सा इनके भरण-पोषण के लिए खर्च कर रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ एवं भारत के सर्वोच्च न्यायालय की यह चिंता भी वाजिब है कि पीड़ित महिलाओं एवं अनाथ बच्चों की अनदेखी न की जाये। भारतीय राजनीति में तुष्टिकरण एक ऐसा हथियार है जिसके बल पर कथित धर्म निरपेक्ष दल वर्तमान केन्द्र सरकार को पस्त करने में कोई मौका नहीं गंवाना चाहते। रोहिंग्या शरणार्थियों की विसात पर भी कई राजनीतिक दलों ने अपना खेल खेलना शुरू कर दिया है। जबकि देश के लिए अपनी आन्तरिक सुरक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अपने प्रदेश में आगामी माह में विधान सभा के चुनाव होने हैं। पिछले अंक में मतदाता जागरूकता हेतु एक पत्रक प्रकाशित किया गया था। मातृवन्दना संस्थान समस्त प्रदेशवासियों से अनुरोध करता है कि वे शत प्रतिशत मतदान हेतु भारतीय चुनाव आयोग द्वारा किये गये जनजागरण अभियान के विषय को प्रभावी बनाएं। देवभूमि राष्ट्रीय स्तर पर शर्मसार हुई है। प्रदेश में पिछले कुछ समय से चरमराई हुई कानून व्यवस्था, बढता हुआ व्यभिचार, महिलाओं के ऊपर अत्याचार, वन माफिया द्वारा भूमि पर अवैध कब्जों व राजनेताओं के भ्रष्टाचार से चर्चित है। चुनावों में राजनीतिक पार्टियों द्वारा तरह-तरह के प्रलोभन भी दिये जाएंगे, चुनावी घोषणापत्र में किये गये वायदों पर भी वाक् युद्ध प्रारंभ हो गया है। मतदाताओं को रिझाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे भी अपनाए जाएंगे लेकिन अब दायित्व हम मतदाताओं के ऊपर है कि प्रदेश के समुचित विकास हेतु एक पारदर्शी नेतृत्व प्रदान करने वाली भय, भ्रष्टाचार, वंशवाद मुक्त सरकार गठित करने के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे ही। अब समय आ गया है कि गरीब, किसान, मजदूर, शिक्षक, कर्मचारी, व्यवसायी, बेरोजगार व्यक्ति अपने मताधिकार द्वारा प्रदेश की खुशहाली के लिए वीवीपीएटी से अपना बहुमूल्य मत किसी बहकावे में आए बिना लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करेंगे। सभी प्रदेश वासियों द्वारा अपने मताधिकार का स्वविवेक के आधार पर किया गया निर्णय अपने प्रदेश के विकास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

तो चरित्रहीन कौन?

गौतम बुद्ध एक बार एक गांव में गए हुए थे। वहां एक स्त्री उनके पास आई और बोली ''आप तो कोई राजकुमार लगते हैं। क्या मैं जान सकती हूं कि इस युवावस्था में गेरूआ वस्त्र पहनने का कारण क्या है?'' गौतम बुद्ध ने विनम्रतापूर्वक से उत्तर दिया कि ''तीन प्रश्नों'' के हल ढूंढने के लिए उन्होंने सन्यास लिया। हमारा यह शरीर जो आज युवा व आकर्षक है, जल्दी ही यह ''वृद्ध'' होगा, फिर ''बीमार'' व अंत में ''मृत्यु'' के मुंह में चला जाएगा। मुझे ''वृद्धावस्था'', ''बीमारी'' व ''मृत्यु'' के कारण का ज्ञान प्राप्त करना है। वृद्ध के विचारों से प्रभावित होकर उस स्त्री ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। शीघ्र ही यह बात पूरे गांव में फैल गई। गांववासी बुद्ध के पास आए व आग्रह किया कि वे उस स्त्री के घर भोजन करने न जाएं, क्योंकि वह ''चरित्रहीन'' है।

बुद्ध ने गांव के मुखिया से पूछा ''क्या आप भी मानते हैं कि वह स्त्री चरित्रहीन है?'' मुखिया ने कहा ''मैं शपथ लेकर कहता हूं कि वह बुरे चरित्र वाले स्त्री है।'' आप उसके घर न जाएं। बुद्ध जी ने मुखिया का दायां हाथ पकड़ा और उसे ताली बजाने को कहा। मुखिया ने कहा ''मैं एक हाथ से ताली नहीं बजा सकता क्योंकि मेरा दूसरा हाथ आपने पकड़ा हुआ है।'' बुद्ध बोले इसी प्रकार वह स्त्री स्वयं चरित्रहीन कैसे हो सकती है? जब तक इस गांव के पुरूष चरित्रहीन न हों। अगर गांव के सभी पुरूष अच्छे होते तो यह औरत ऐसी न होती इसलिए इसके चरित्र के लिए यहां के पुरूष भी जिम्मेदार हैं। यह सुनकर सभी ''लज्जित'' हो गए।

❖ साभार: शाश्वत राष्ट्रबोध

कैसी महिमा शबरी माँ की

मतंग ऋषि ने शबरी नाम की वृद्धा को अपने आश्रम में स्थान दे दिया यह बात कुछ वर्णाभिमानी को बहुत बुरी लगी उन्होंने मतंग का बहिष्कार कर दिया। एक दिन कहीं जाते समय शबरी का शरीर सामने से स्नान करके आते व्यक्ति के शरीर से छू गया। इस पर क्रुध होकर उन्होंने शबरी को बहुत बुरा-भला कहा और दोबारा उस सरोवर में स्नान करने चले गए। किन्तु इस अपमान के पाप से उस सरोवर का पानी रक्त जैसा हो गया और उसमें कीड़े पड़ गए। भगवान राम जब दण्डकारण्य आए तब सबसे पहले शबरी की कुटिया में जाकर उसके जूठे बेर खाए। तब ऋषियों ने सरोवर में कीड़े पड़ने व उसका जल रूधिर होने की बात सुनाई। तो लक्ष्मण जी ने कहा - 'मतंग ऋषि के बहिष्कार और

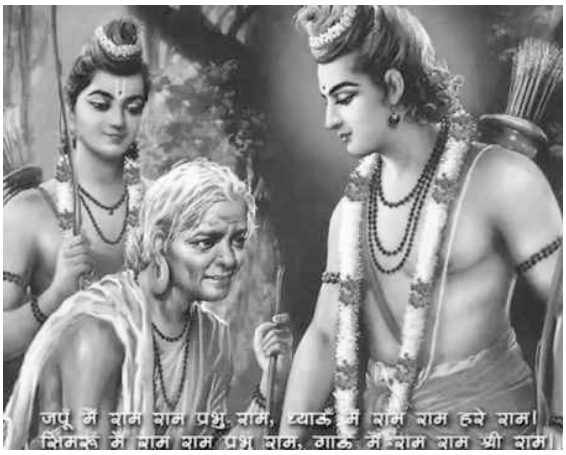

मां शबरी के अपमान का यह फल है। अब शबरी यदि उस जल का स्पर्श करे तो वह जल शुद्ध हो जाएगा। 'मां शबरी ने उस तालाब में प्रवेश किया और वह पूर्ववत् शुद्ध हो गया। भगवान की दृष्टि में जाति का नही, भावना का मूल्य है।' ❖

साख बनाने के सहज नियम

सज्जनता और मधुर व्यवहार मनुष्यता की पहली शर्त है।

'साख या गुडविल' एक असाधारण शब्द है। इस दुनिया में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप वास्तविकता में क्या हैं, वरन् यह महत्वपूर्ण है कि दुनिया आपको क्या समझती है।

सबके सामने करें प्रशंसा

निंदा गुडविल की सबसे बड़ी कैंची है। प्रशंसा सुनने की ललक तो हर व्यक्ति में होती है, लेकिन निंदा सुनने का साहस कम लोगों में होता है। अच्छी मंशा से भी किसी की निंदा की जाए तो भी अधिकांश लोग उसे एक व्यक्तिगत आघात के रूप में ले लेते हैं। इसलिए आवश्यता होने पर ही किसी की निंदा करें।

खूबियां गिनाइए

अपनी वास्तविक कमजोरियों की चर्चा दूसरों के सामने ना करें। इनका फायदा उठाकर दूसरे आपका दुष्प्रचार करेंगे और आपके ऊपर हावी हो जाएंगे। कमजोरियों का रोना-रोने से किसी को कोई फायदा नहीं होता। बुद्धिमानी यह होगी कि आप हिम्मत हारने की बजाय उन पर व्यक्तिगत रूप से कार्य करें और विजय पाएं

खुली किताब न बने

कुछ लोग जरा-जरा सी बात पर हिम्मत हार जाते हैं और जिंदगी के प्रति नकारात्मक हो जाते हैं। इनसे कोई अनजान व्यक्ति भी थोड़ी देर अपनेपन से बात कर ले, तो ऐसे लोग अपना सारा भूत, भविष्य और वर्तमान खोल कर रख देते हैं और उनका जीवन एक खुली किताब की तरह चर्चा का विषय बन जाता है।

भड़ास मत निकालिए

यदि आपको कोई बात बुरी लग रही हो, लेकिन आपको मालूम है कि आपके कहने से कुछ नहीं बदलेगा तो सिर्फ भड़ास निकालने के लिए अपनी बात ना कहें। बार-बार विरोधी स्वर में बोलने वाले व्यक्ति तथा लगातार आपत्ति दर्ज करने वाले व्यक्ति की टीमवर्क और गुडविल कम होती चली जाती है।

मुंह खोलो तो अच्छा बोलो

आप दूसरों को हमेशा प्रोत्साहित करें। शानदार, गुड आइडिया, जैसे शब्द आप लगातार और नियमित रूप से प्रयोग करें। 'मुंह खोलो तो अच्छा बोलो' का नियम याद रखें। गुडविल बढ़ाने का यह एक महत्वपूर्ण मंत्र है, क्योंकि कहे गए शब्द लौटकर वापस नहीं आते।

समस्या का समाधान

समस्या नहीं समाधान का हिस्सा बनिए। कुछ लोग हर ओर मुश्किलें देखते हैं और शिकायतें करते रहते हैं, ऐसे लोगों को परिवार और समाज में कोई पसंद नहीं करता। इसके विपरीत जो लोग ठंडे दिमाग से हल ढूंढने का प्रयास करते हैं, उनकी हर ओर प्रशंसा होती है।

व्यस्त रहिए

समय की पाबंदी का पालन कीजिए, दूसरों को लगना चाहिए कि आप बातों के खरे हैं। इससे दूसरों की नजर में आपकी गरिमा बढ़ती है। इससे यह संदेश जाता है कि आप मूल्यों और अनुशासन वाले व्यक्ति हैं। खाली बैठे व्यक्ति को गुडविल बिगाड़ने के लिए अतिरिक्त प्रयास नहीं करना पड़ता, उनकी गुडविल स्वत: ही बिगड़ जाती है।

गुडविल बढ़ाइए

अपनी छवि विद्वान की बनाइए। यदि आप किसी विषय पर दूसरों से बात कर रहे हैं तो विषय का पूर्व अध्ययन कर लीजिए और होमवर्क करके जाइए। जब आप दूसरों के सामने विभिन्न विषयों पर विचार व्यक्त करेंगे, तो अन्य लोगों के मन में आपकी विद्वतापूर्ण गुडविल बनेगी। यदि किसी विषय की आपको जानकारी ना हो, तो कभी भी गलत बात कहकर अपना गलत ज्ञान सिद्ध ना करें और न ही सबके सामने अपनी अज्ञानता स्वीकार करें।❖

रोहिंग्या मुसलमानों का सामयिक विमर्श

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

म्यांमार की अधिकांश आबादी बौद्ध है। एक रिपोर्ट के अनुसार वहां लगभग दस लाख रोहिंग्या मुसलमान हैं जिनके बारे में यह कहा जाता है कि वे मुख्यत: बांग्लादेशी प्रवासी हैं। वहां की सरकार ने उन्हें नागरिकता देने से इंकार कर दिया है। वैसे तो वे म्यांमार में सदियों से रह रहे हैं, लेकिन वहां से पलायन कर लाखों की संख्या में बांग्लादेश पहुंच रहे रोहिंग्या शरणार्थियों को मुद्दा आजकल वैश्विक विमर्श का विषय बना हुआ है। और, इस जटिल समस्या को लेकर भारत सरकार ने भी अपनी स्थिति को स्पष्ट कर दिया है। वस्तुत: इस विषय की संवेदनशीलता को देखते हुए केंद्र सरकार के लिए एक तरह से उसकी कूटनीतिक व आतंकवाद से लड़ने की क्षमताओं के लिए एक बड़ी परीक्षा की तरह है।

जैसा कि हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि म्यांमार के रोहिंग्या मुस्लिम नागरिकों को शरण देने के संबंध में केंद्र की मोदी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में जो महत्वपूर्ण याचिका दायर की है उसमें राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिक रूप से अपनी चिन्ता के मूल में रखा है।

व्यापक राष्ट्रीय संदर्भ से आवृत्त इस संदर्भ में सुनिश्चित रूप से किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। हालांकि मानवता के आधार यह सवाल अपेक्षित है कि क्या म्यांमार से इस जातीय समुदाय के लोगों का जबरन पलायन जिस तरह म्यांमार की सरकार करा रही है, उस पर दुनिया के अन्य देशों को क्या ध्यान नहीं देना चाहिए? क्या इन नागरिकों के मूलभूत अधिकारों की रक्षा नहीं की जानी चाहिए? नि:संदेह, मानव कल्याण सर्वोपरि है और भारत की सामाजिक संस्कृति इसका खुलकर समर्थन करती है लेकिन सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि वास्तव में म्यांमार के निवासी होते हुए भी रोहिंग्या मुसलमान म्यांमार सरकार की निगाह में वहां के नागरिक क्यों नहीं हैं? इसके साथ ही यह भी ज्ञात होना चाहिए कि भारत की भूमिका उनके संदर्भ में क्यों निर्णायक है? ध्यातव्य है कि म्यांमार बहुत लम्बे समय तक सैन्य शासन के अधीन रहा है, जिसकी वजह से वहां नागरिक अधिकारों का प्राय: हनन होता रहा है।

इतना ही नहीं, फिलहाल वहां जिस तरह का लोकतन्त्र स्थापित हुआ है उसमें भी सेना की भूमिका को अहम माना गया है। इस आलोक में तमाम राजनीतिक दावों के बावजूद इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि विभिन्न जातीय समूहों को देखने का सैन्य तरीका लोकतान्त्रिक नजरिये से मेल नहीं खा सकता।

विवेचनार्थ, वर्ष 1982 ई. में रोहिंग्या समुदाय के लोगों को म्यांमार की सरकार ने अपने देश का नागरिक मानने से इन्कार कर दिया और यह विधिक व्यवस्था की कि 'अराकान जातीय समूह' के ये लोग म्यांमार के आठ अन्य मूल जातीय समूहों का भाग नहीं रहे हैं। ये बंगलाभाषा से मिलती-जुलती भाषा बोलते हैं और इनकी वास्तविक जगह बंगलादेश का हिस्सा रहा अराकान है। लेकिन, यहां एक रोचक तथ्य यह भी है कि अराकान मूल के लोगों में हिन्दू भी हैं। वैसे तो इनकी संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है, परंतु 'राखिन' प्रदेश में इनका भी लेना-देना है, जिसे रोहिंग्या अपना प्रदेश मानते हैं। तभी से यह मांग इस समूह के लोगों द्वारा उठाई जाती रही है कि उन्हें भी आत्म निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए और उनकी भी पहचान सुनिश्चित होनी चाहिए। इस संदर्भ में यह कम आश्चर्यजनक नहीं है

कि जो लोग सदियों से म्यांमार में रहते आये हैं, वे वहां के नागरिक क्यों नहीं हो सकते और, यहीं पर भारत की भूमिका महत्वपूर्ण बनती है, साथ ही निर्णायक भी, क्योंकि 1935 तक पूरा म्यांमार ब्रिटिश भारत का ही हिस्सा था और यहां के निवासी भी भारतीय ही कहलाते थे। कुछ लोगों का मानना है कि रोहिंग्या दरअसल 'भारतीय-आर्य' जातीय समूह के लोग हैं, जिन्होंने आठवीं शताब्दी के बाद से इस्लाम धर्म अपनाना शुरू किया, परंतु वर्ष 1982 ई, के म्यांमार कानून के तहत इन्हें न केवल नागरिकता से अलग रखा गया है, अपितु सरकारी शिक्षा और नौकरियों में भी इनका प्रवेश पूरी तरह से निषेध है।

ऐतिहासिक संदर्भ के आलोक में वर्ष 1935 ई. तक भारत का हिस्सा रहने वाले किसी भी देश के नागरिकों के किसी समुदाय के साथ यदि इस प्रकार का व्यवहार वहां की सरकार करती है तो भारत का चिंतित होना स्वाभाविक है, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने वर्ष 1935 ई. में जो नया 'भारत शासन अधिनियम' बनाया था, उसमें 'म्यांमार' को अलग देश घोषित करने के बाद ही यह कदम उठाया गया था। परंतु इसके पूर्व ब्रिटिश सरकार के भारत सरकार अधिनियम, 1917 के अनुसार म्यांमार (बर्मा) भारत का ही हिस्सा था। उल्लेखनीय है कि उस समय अंग्रेजों ने श्रीलंका को भी भारत से अलग किया था। अत: इन देशों की जातीय समूहों की समस्याओं से मूलत: भारत का संबंध छिपा हुआ है।

अत: रोहिंग्या जातीय समूह के लोगों के अधिकारों के विषय पर भारत का राष्ट्रसंघ में रूख उनके मानवीय व नागरिक अधिकारों के हक में ही हो सकता है। लेकिन सवाल फिर भी महत्वपूर्ण है कि सदियों से 'राखिन प्रदेश' के निवासियों को म्यांमार की सरकार अपना नागरिक मानने के लिए क्यों तैयार नहीं हो रही है, और उन्हें सभी सरकारी सुविधाओं से वंचित रखने की मूल वजह क्या हो सकती है?

दरअसल भारत सरकार रोहिंग्या लोगों की समस्या को 'हिन्दू-मुसलमान' की नजर से देखने का जोखिम नहीं उठा सकती जैसा कि तथाकथित 'मानवाधिकारों की आड़' में वामपंथी समुदाय कर रहे हैं। क्योंकि, इससे भारत की समुकित संस्कृति व समरस समाज के भीतर के साम्प्रदायिक सौहार्द को ही हम शक के घेरे में लोकर खड़ा कर देने की निर्णायक व अभूतपूर्व गलती कर बैठेंगे। लेकिन, मूल प्रश्न यह है कि किसी भी देश में रहने वाले लोग राज्यविहीन किस प्रकार हो सकते हैं। यदि राज्य उन पर अत्याचार करता है तो वे विश्व के लोकतांत्रिक देशों का दरवाजा अवश्य खटखटायेंगे और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। यदि रोहिंग्या मुस्लिम समुदाय के कुछ लोगों का रिश्ता आतंकवादी संगठनों या पाकिस्तान की दहशतगर्द संगठनों से रहा है तो उसका वास्तविक समाधान भी हमें अनिवार्यत: ढूंढना होगा।

इसलिए भारत सरकार की चिंता बेवजह नहीं है। इसके लिए सबसे उपयुक्त यह होगा कि भारत, म्यांमार व बंगलादेश मिलकर भावनात्मक होने की बजाय 'रोहिंग्या मुसलमानों' की समस्या का स्थायी व तार्किक समाधान निकालें। यह कहना तर्कसंगत नहीं है कि मुस्लिम होने के नाते रोहिंग्या किसी मुस्लिम देश की शरण में ही जायें, इसके साथ-साथ हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि इस मुद्दे पर भारत के कट्टरपंथी समझे जाने वाले मुस्लिम संगठन किसी भी तरीके से हिन्दू-मुसलमान की राजनीति को न पनपायें। इस आलोक में 'इतेहाद-ए-मुसलमीन(के नेता असदुद्दीन ओवैसी का यह तर्क पूरी तरह गलत व भ्रामक है कि जब भारत तिब्बत से निर्वासित लोगों को शरण दे सकता है तो रोहिंग्या मुसलमानों को क्यों नहीं। दरअसल वे दो बेमेल परिस्थितियों की तुलना कर रहे हैं। ध्यातव्य है कि चीन ने तिब्बत पर कब्जा किया था, जबकि रोहिंग्या म्यांमार से पलायन करना नहीं चाहते हैं।, बल्कि वे वहीं रहना चाहते हैं। लेकिन, वहां की सरकार उन्हें अपने यहां से भगाने पर तुली हुई है और जिसका लाभ पाकिस्तान जैसा आतंकवादियों को पनाह देने वाला देश उठाना चाहता है। रोहिंग्या लोगों में जो हिन्दू हैं उनके साथ भी म्यांमार की सरकार ऐसा ही व्यवहार कर रही है। सेनाओं ने उन पर भी जुल्म किए हैं और उनके घरों को भी जलाया है। अत: समस्या हिन्दू-मुसलमान की नहीं है, भारतीय उपमहाद्वीप के निवासियों की है।❖

'रोहिंग्या' शरणार्थी और राष्ट्रीय सुरक्षा

-नीतू वर्मा

म्यांमार के रखाइन प्रांत से संबंध रखने वाले रोहिंग्या शरणार्थियों की समस्या ने हमारे देश के बुद्धिजीवियों की विचारधारा को दो भागों में बांट दिया है, एक विचारधारा देश के गौरवमयी इतिहास का हवाला देकर कह रही है कि जब भारत ने तिब्बत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका तथा बांगलादेश से आए शरणार्थियों को पूर्व में शरण दी है, तो रोहिंग्या शरणार्थियों को भी शरण देने में कोई गुरेज नहीं होना चाहिए। वहीं दूसरी विचारधारा देश की आंतरिक सुरक्षा का हवाला देकर इन्हें वापिस म्यांमार भेजे जाने के पक्ष में है। इस बीच सरकार ने भी यह स्पष्ट कर दिया है कि देश में अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्याओं को वापिस अपने देश म्यांमार जाना होगा। किन्तु विपक्षी दल तथा कुछ मानवाधिकार संगठन इस समस्या को धार्मिक दृष्टि से जोड़कर सरकार के इस निर्णय को एक संप्रदाय विशेष के विरूद्ध पूर्वाग्रह से प्रभावित निर्णय मानकर अपना राजनीतिक लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उन लोगों द्वारा पूर्व सरकारों के फैसलों की दुहाई देकर वर्तमान सरकार को मुसलमान विरोधी प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा रहा है, किन्तु इन लोगों के रोहिंग्या समर्थन में तर्क, विभिन्न कारणों से गले नहीं उतरते।

शरणार्थियों को शरण देने अथवा न देने का निर्णय लेना किसी भी सरकार के लिए आसान कार्य नहीं होता, परन्तु वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए यह निर्णय कठिन, लेकिन सही जान पड़ता है। पूर्व में सरकारों द्वारा शरणार्थियों के संदर्भ में लिए गए निर्णय उस समय की परिस्थितियों के आधार पर सही लगते हैं, किन्तु वर्तमान समय में आतंकवाद, अलगाववाद तथा वैश्विक घटनाओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान सरकार का निर्णय देश के लिए सही जान पड़ता है। भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देश अपने नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, शरणार्थियों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। अमेरिका, रूस, इज़राइल, इरान, हंगरी, साउदी अरेबिया, इंग्लैंड, कनाडा, बांगलादेश इत्यादि देशों के ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो सुरक्षा कारणों से शरणार्थियों को स्वीकारने से साफ इंकार करते हैं।

युद्ध तथा सांप्रदायिक दंगों के फलस्वरूप उपजी शरणार्थियों की भारी तादाद अनेक समस्याओं को जन्म देती है। मानवता के आधार पर दी गई शरण की आड़ में इन शरणार्थियों के साथ ऐसे तत्व भी देश में प्रवेश कर जाते हैं, जिनका सीधा संबंध असामाजिक व आतंकवादी गतिविधियों से रहा हो। उनकी इस प्रवृति के चलते वे दोनों देशों के लिए समस्याओं का सबब बनते हैं। इसका जीवन्त उदाहरण फ्रांस, अमेरिका, काँगों, पाकिस्तान साहित अनेक ऐसे देश हैं जहां हो रही आतंकी घटनाओं के पीछे शरणार्थियों का ही हाथ पाया गया है। शरणार्थी बन कर आए असामाजिक तत्व, शरण देने वाले देश के साम्प्रदायिक माहौल को खराब करने में जिम्मेवार हैं। इन कारणों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता क्योंकि म्यांमार सरकार तथा रोहिंग्या के मध्य विवाद का मुख्य कारण भी अरकान रोहिंग्या सॉल्वेशन आर्मी की आतंकी घटनाएं हैं। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के पास इस संगठन तथा आई.एस.आई.एस. के मध्य संबंध के साक्ष्य उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में देश के सर्वोच्च न्यायालय ने भी सरकार को देश की सुरक्षा तथा मानवीय आधारों के मध्य संतुलन बनाने के निर्देश दिए हैं। भारत सहित विभिन्न देशों के पिछले अनुभवों के आधार पर यह भी पाया गया है कि अस्थायी शरण के नाम पर आए

शरणार्थी शरण देने वाले देश को आसानी से छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं होते। अपने देश में स्थिति सामान्य होने के बावजूद शरणार्थी अपने देश वापिस नहीं जाते तथा कठिन समय में मानवीयता के आधार पर शरण देने वाले देश के लिए जटिल समस्या बन जाते हैं जो देश के नागरिकों तथा इन शरणार्थियों के मध्य संघर्ष को जन्म देता है। ऐसे मसलों पर मानवाधिकारों की दुहाई देकर शरणार्थियों की पैरवी करने वाले भी चुप्पी साध लेते हैं।

यदि भारत के विभिन्न क्षेत्रों विशेष कर पूर्वोतर राज्यों की बात की जाए तो इन राज्यों में अशांति का मुख्य कारण बांग्लादेश से भारत आए शरणार्थी ही रहे हैं। एक ऐसे देश को जो आतंकवादी घटनाओं तथा सांप्रदायिक दंगों से ग्रस्त रहा हो, के लिए नए घुसपैठियों को स्वीकारना कोई बुद्धिमानी वाला निर्णय नहीं कहा जा सकता। इन सब कारणों को ध्यान में रखते हुए, इस बात की आवश्यकता है कि देश में गैर-कानूनी तरीके से घुस चुके रोहिंग्या मुस्लिमो की पहचान कर उनकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखी जाए। साथ ही सरकार म्यांमार सरकार से बात करके उसे इस समस्या को जल्द से जल्द निपटाकर, इन की वापसी का मार्ग प्रशस्त करे। इसमें कोई संशय नहीं है कि रोहिंग्या आतंकवादियों तथा म्यांमार सेना और पुलिस के संघर्ष के कारण जिस प्रकार आम नागरिकों को देश छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा है वह निश्चय ही चिन्ता का विषय है तथा भारत को एक पड़ोसी देश होने के नाते इस समस्या के समाधान में सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। किन्तु इस के साथ ही भारत सरकार को अपने नागरिकों की सुरक्षा का भी पूरा अधिकार है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि सरकार राजनीतिक नफे नुकसान की चिन्ता किए बिना अपने नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए ऐसे कदम उठाए कि इस समस्या के समाधान के साथ-साथ देश की सुरक्षा भी कायम रहे। ❖

उत्तर- 1.हिमाचल प्रदेश व गुजरात, 2. 68, 3.36,000 कि.मी., 4. रवीन्द्र नाथ टैगोर, 5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, 6. पेरिफेरल्स, 7. स्क्रॉल करना, 8. 24 अक्तूबर 1945, 9. बैंगलूरू में, 10. भारत ने।

केन्द्र सरकार का रोहिंग्याओं को देश की सुरक्षा के लिए खतरा बताना विवेकपूर्ण कथन

रोहिंग्या का प्रश्न शरणार्थी प्रश्न है ही नहीं। यह सिद्ध कर दिया भारत के वांछित अपराधी और पाकिस्तानी आतंकवादी मसूद अजहर के उस बयान ने जिसमें उसने रोहिंग्या के समर्थन में मुसलमानों को एकजुट होने का फरमान दिया है। क्या यह युद्ध है कि सबको एक खूंखार आतंकवादी लामबंद होने का निर्देश दे रहा है? और युद्ध है तो किसके खिलाफ? भारत के ऊपर अब्दुल्ला, ओवैसी और सेकुलर किस्म के हिंदू पत्रकार बड़ा उतावलापन दिखाते हुए रोहिंग्या आक्रमणकारियों के लिए घड़े-घड़े आंसू बहाते हुए विलाप कर रहे थे।

जहां भी मुसलमान बहुसंख्यक होते हैं, वहां वे अल्पसंख्यकों का जीना दुश्वार कर देते हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश तो छोटे उदाहरण हैं जहां हिंदू, बौद्ध और ईसाई अल्पसंख्यकों का जीवन हमेशा बर्बरता की तलवार तले रहता है। उनके बारे में ये भारतीय मुसलमान तथा उनसे भी ज्यादा इस्लामी वफादारी दिखाने वाले ढोंगी सेकुलर कभी कुछ बोलते नहीं। क्या आपने कभी इन मोमबत्ती वालों को पाकिस्तान में इस्लामी दरिंदों का शिकार होने वाले हिंदुओं की चीत्कारों के बारे में रोष दिखाते देखा है? क्या कभी ये लोग पाकिस्तानी सेना द्वारा बलूचिस्तान में ढाए जाने वाले अत्याचारों पर कुछ बोलते हैं? बिल्कुल नहीं। क्योंकि वे वफादार इस्लामी होने के नाते कहते हैं कि पाकिस्तान अपने मुल्क की सरहदों के भीतर जो कर रहा है, वह उसका व्यक्तिगत मामला है और हमें किसी दूसरी मुल्क के अंदरूनी मामलों में दखल देने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन यदि हमारा घनिष्ठ मित्र म्यांमार, जो भारत विरोधी आतंकवादी संगठनों के विरूद्ध कार्रवाई में हमारी भरपूर सहायता करता है, यदि अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा तथा सामाजिक सद्भाव के लिए हिंसक तथा कृतघ्न लोगों के खिलाफ कार्रवाई करता है तो उसे म्यांमार का अंदरूनी मामला नहीं मानना चाहिए, बल्कि उसके खिलाफ सारी दुनिया को एकजुट हो जाना चाहिए।

रा. स्वं. संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत का नागपुर विजयादशमी उद्बोधन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस पर नागपुर स्थित रेशिमबाग मैदान में संघ का विजयादशमी उत्सव व शस्त्र पूजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों की विस्तार से चर्चा करते हुए समाधान के नाते समाज की सकारात्मक शक्ति के जागरण का आह्वान किया।

उनके उद्बोधन के प्रमुख अंश:-

राष्ट्रीय दृष्टि

यह वर्ष परम पूज्य पद्मभूषण कुशक बकुला रिनपोछे की जन्मशती का वर्ष है, साथ ही स्वामी विवेकानंद के प्रसिद्ध शिकागो अभिभाषण का 125वां वर्ष तथा उनकी शिष्या स्वनामधन्य भगिनी निवेदिता के जन्म का 150वां वर्ष है। स्वामी विवेकानंद जी ने अपने शिकागो अभिभाषण में भारत की विश्व मानवता के प्रति जिस राष्ट्रीय दृष्टि की घोषणा की थी, उसी का व्यक्तिगत व सार्वजनिक जीवन में प्रकटीकरण आचार्य बकुला जी के द्वारा किया गया। यह राष्ट्रीय दृष्टि हमारी विरासत है। आदि कवि वाल्मीकि ने इसी दृष्टि के जागरण हेतु मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन को अपनी चिरंजीवी कृति महाकाव्य रामायण का विषय बनाया। हमारे प्रमुख भक्ति आंदोलन के आचार्य संत शिरोमणि रविदास महाराज ने स्वयं के जीवन व उपदेशों से इसी दृष्टि का पुन:जागरण जनसामान्य में किया था। भगिनी निवेदिता द्वारा भी उसी राष्ट्रीय आदर्श को चरितार्थ करने वाला हिंदू समाज इस देश में खड़ा करने के लिए सतत समाज जागरण व प्रबोधन के प्रयास किए गए।

राष्ट्र का वास्तविक विकास

हम सब की भाषाओं, प्रान्त, पंथ-संप्रदाय, जाति-उपजाति, रीति-रिवाज, रहन-सहन की विविधताओं को एक सूत्र में पिरोने वाली हमारी संस्कृति व उसके जनक, विश्व मानवता को कौटुंबिक दृष्टि से देखकर विकसित हुए सनातन जीवनमूल्य, हमारी 'हम भावना' है। वही भावना समाज के व्यक्ति, परिवार तथा समाज के जीवन के सभी अंगों को अनुप्राणित करती हुई उनके क्रियाकलापों से स्पष्ट रूप में आविष्कृत होती है।

शाश्वत सत्य का अनुभव

1. योगविद्या तथा पर्यावरण की हमारी अपनी पहल के कारण अंतरराष्ट्रीय जगत में उस भूमिका की बढ़ती मान्यता व स्वीकार हम सबके मन में विद्यमान अपने प्राचीन राष्ट्र के प्रति गौरव की सुखद अनुभूति देता है।
2. पश्चिम सीमा पर पाकिस्तान की तथा उत्तर सीमा पर चीन की कार्रवाईयों के प्रति, 'डोकलाम' जैसी घटनाओं में उजागर भारत का सीमाओं पर तथा अंतरराष्ट्रीय राजनय में सशक्त व दृढ़ प्रतिभाव हमारे मन में स्व-सामर्थ्य की आश्वासक अनुभूति जगाने के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय जगत में भी भारत की प्रतिमा को नयी सम्मानजनक ऊंचाई प्रदान करता है।
3. आवागमन के बुनियादी ढांचे की गति से विस्तार अरूणाचल जैसे सीमावर्ती राज्यों में भी होता हुआ दिख रहा है।
4. महिला वर्ग की समुन्नति को लेकर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएं भी चल रही हैं।
5. स्वच्छता अभियान जैसे उपक्रमों से नागरिकों में कर्तव्य भावना का संचार कर उनकी सहभागिता भी प्राप्त की जा रही है। कहीं-कहीं मूलगामी बदलाव के प्रयास, जनमानस में नवीन आशा व साथ-साथ अपेक्षाओं का भी सृजन कर रहे हैं। बहुत कुछ हो रहा है, होगा, इसके साथ जो हो रहा है, उसमें तथा और अधिक कुछ होना चाहिए,

उसको लेकर समाज में चर्चाएं चल रही हैं।

6. कश्मीर घाटी की परिस्थिति को लेकर सेना और सुरक्षा बलों द्वारा दृढ़ता के साथ सीमा के उस पार से होने वाली आतंकियों की घुसपैठ व बिना कारण गोलीबारी का सामना किया जा रहा है, उसका स्वागत।
7. अलगाववादी तत्वों की उकसाऊ कार्रवाई व प्रचार-प्रसार को, उनके अवैध आर्थिक स्त्रोतों को बंद करके तथा राष्ट्रविरोधी आतंकी शक्तियों से उनके संबंधों को उजागर कर तथा रोककर नियंत्रित किया जाना।

भेदभाव रहित, स्वच्छ प्रशासन चाहिए

लद्दाख, जम्मू सहित संपूर्ण जम्मू-कश्मीर राज्य में भेदभावरहित, पारदर्शी, स्वच्छ प्रशासन के द्वारा राज्य की जनता तक विकास के लाभ पहुंचाने के कार्य त्वरित व अधिक गति से हो, इसकी अभी भी आवश्कता है। राज्य में विस्थापितों की समस्या का निदान अभी तक नहीं हुआ है। राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों में रहने वाले नागरिक सदैव सीमा पार से चलने वाली गोलीबारी, आतंकी घुसपैठ आदि की छाया में वीरतापूर्वक डटे हैं, एक प्रकार से वे भी इन राष्ट्रविरोधी शक्तियों के साथ प्रत्यक्ष युद्धरत हैं। शासन व प्रशासन के द्वारा उनको पर्याप्त राहत आदि की व्यवस्था करवाने के साथ-साथ समाज के विभिन्न संगठनों को भी वहां संपर्क बनाकर, अपनी शक्ति में संभव हो उतनी तथा आवश्यकतानुसार सुयोग्य सेवाओं की व्यवस्था करनी चाहिए।

गोरक्षकों पर प्रश्नचिन्ह न लगाएं

वस्तुस्थिति न जानते हुए अथवा उसकी उपेक्षा करते हुए गोरक्षा व गोरक्षकों को हिंसक घटनाओं के साथ जोड़ना व सांप्रदायिक प्रश्न के नाते गोरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगाना ठीक नहीं। अनेक मुस्लिम मतानुयायी सज्जनों के द्वारा भी गोरक्षा, गोपालन व गोशालाओं का उत्तम संचालन किया जाता है। सात्विक भाव से संविधान कानून की मर्यादा का पालन कर चलने वाले गोरक्षकों को, गोपालकों को चिन्तित या विचलित होने की आवश्यकता नहीं।

नयी शिक्षा नीति-रचना जरूरी

भारतीय समाज के मानस में आत्महीनता का भाव व्याप्त हो, इसलिए शिक्षा व्यवस्था की रचनाओं में, पाठ्यक्रम में व संचालन में अनेक अनिष्टकारी परिवर्तन विदेशी शासकों के द्वारा परतंत्रताकाल में लाए गए। उन सब प्रभावों से शिक्षा को मुक्त होना पड़ेगा। नई शिक्षानीति की रचना हमारे देश के सुदूर वनों में, ग्रामों में बसने वाले बालक-तरूण भी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे, उतनी सस्ती व सुलभ होनी पड़ेगी। उसके पाठ्यक्रम राष्ट्रीयता व राष्ट्रगौरव का बोध जागृत कराने वाले तथा प्रत्येक छात्र में आत्मविश्वास, उत्कृष्टता की चाह, जिज्ञासा, अध्ययन व परिश्रम की प्रवृति जगाने के साथ-साथ शील, विनय, संवेदना, विवेक व दायित्वबोध जगाने वाले होने चाहिए। हाल ही में छोटे-मोटे कारणों को लेकर समाज का रास्ते पर उतरना, नागरिक कर्तव्य, कानून, संविधान के प्रति उदासीनता या अनादर दिखाते हुए बिना कारण हिंसा पर उतारू होना, ऐसी जो घटनाएं घट रही हैं, उनका मूल समाज के असंतोष अथवा उस पर खेलने वाली स्वार्थी राजनीति या अन्य तत्वों के बराबर मात्रा में समाज के विवेक, संस्कार तथा दायित्वबोध के अभाव में भी है।

सिद्ध हो समाज

इसलिए सद्यस्थिति में शासन की भारतीय मूल्याधारित नीति तथा प्रशासन द्वारा उसका प्रामाणिक, पारदर्शी व अचूक क्रियान्वयन जितना आवश्यक है, उतना ही समाज का राष्ट्रहितैक बुद्धि से संघबद्ध, गुणवत्तायुक्त व अनुशासित होकर चलना इसकी आवश्यकता है। 1925 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी कार्य में लगा है। अपने पराक्रमी व त्यागी पूर्वजों का गौरव जिनके अंत:करण का आलंबन है व इस राष्ट्र को परमवैभवसंपन्न बनाने के लिए सर्वस्वत्याग ही जिनकी सामूहिकता की व कर्म की प्रेरणा है, ऐसे कार्यकर्ताओं का देशव्यापी समूह बनाने का यह कार्य अपने 93वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। कार्य निरंतर गति से बढ़ रहा है। राष्ट्रजीवन के सभी अंगों में संघ के स्वयंसेवक सक्रिय हैं। विश्वगुरू भारत के पूर्ण स्वरूप का प्रकटन हम आने वाले कुछ ही दशकों में कर सकेंगे, ऐसी अनुकूलता सर्वदूर विद्यमान है, अवसर को तत्परतापूर्वक पकड़ना हमारा कर्तव्य है। ❖ **साभार वीएसके भारत**

धर्म परिवर्तन के लिए मिला टारगेट और पैसा

धर्मांतरण करते हुए उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ के बांसटोली गांव में गिरफ्तार छह आरोपियों ने पूछताछ में चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। पुलिस को उन्होंने बताया कि धर्मांतरण के लिए हमें भी टारगेट मिलता है। इसके लिए रूपए भी दिए जाते हैं। राज्य में धर्म परिवर्तन निषेध कानून लागू होने के बाद इस तरह का पहला मामला है। ❖

माता -पिता की देखभाल नहीं की तो कटेगा आपका वेतन

असम विधानसभा ने एक बेहद अहम विधेयक पास कर दिया। इसके मुताबिक सरकारी कर्मियों के लिए यह जरूरी होगा कि वे अपने माता-पिता और दिव्यांग भाई-बहनों की सही तरीके से देखभाल करें। अगर कोई सरकारी कर्मचारी ऐसा नहीं करता है तो उसके मासिक वेतन में से 10 फीसद राशि काट ली जाएगी। यह पैसा उस कर्मचारी के माता-पिता या दिव्यांग भाई-बहनों को खर्च के लिए दे दिया जाएगा।

इस तरह का विधेयक पास करने वाला असम देश का पहला राज्य है। द असम इंप्लायीज पैरेंट्स रेस्पांसिबिलिटि एंड नॉर्मस फॉर अकाउंटिबिलिटि एंड मॉनिटिरिंग (प्रोनाम) बिल 2017 में राज्य सरकार तथा अन्य संगठनों के कर्मियों के लिए माता-पिता तथा दिव्यांग भाई-बहनों की जवाबदेही का प्रावधान किया गया है।

विधेयक को सदन में रखते हुए असम सरकार के मंत्री हेमंत विश्वशर्मा ने कहा कि इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि यदि माता-पिता या दिव्यांग भाई बहनों की उपेक्षा होती है तो वे सरकारी कर्मी के विभाग में शिकायत दर्ज करा सकते हैं।❖

बिहार का सहस्त्राब्दि महायज्ञ

बिहार के आरा के चंदवा में 25 सितंबर से शुरू श्री रामानुजाचार्य सहस्त्राब्दि महामहोत्सव सहस्त्र महायज्ञ पूरे वैदिक रीति-रिवाज से सम्पन्न हुआ। इसमें प्रति दिन लाखों की संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। महायज्ञ की पूर्णाहुति 5 अक्टूबर को हुई। इसमें बड़ी संख्या में धर्माचार्य, विद्वान और राजनेता शामिल हुए। यज्ञ स्थल पर हैलीकॉप्टर से पुष्प-वर्षा की गई। कार्यक्रम को लेकर देश-विदेश से संत महात्माओं का आगमन हुआ। यज्ञ शहर में तीन तरफ से पहुंचने का मुख्य रास्ता था। चार अक्तूबर को इन तीनों रास्तों पर चार से पांच किलोमीटर दूरी तक सिर्फ और सिर्फ श्रद्धालु दिख रहे थे। यह नजारा सुबह से शाम तक रहा। महायज्ञ में 11000 ब्राह्मणों ने भाग लिया। इसमें देश-विदेश के साधु भी आये।

यज्ञ का नाम था चातुर्मास लक्ष्मीनारायण महायज्ञ सह रामानुजाचार्य सहस्त्राब्दि समारोह और मुख्य यज्ञकर्ता थे श्री लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज।❖

हाईकोर्ट ने खारिज की मदरसों की याचिका, राष्ट्रगान गाना ही होगा

उत्तरप्रदेश के मदरसों में राष्ट्रगान अनिवार्य करने संबंधी राज्य सरकार के फैसले पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भी मुहर लगा दी है। योगी सरकार के इस फैसले को चुनौती देने वाली मदरसों की याचिका बुधवार को हाईकोर्ट ने खारिज कर दी। राष्ट्रगान को जाति, धर्म और भाषा के भेद से परे बताते हुए हाईकोर्ट ने मदरसों की आपत्तियां दरकिनार कर दीं। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि मदरसों को राष्ट्रगान गाने से छूट नहीं मिलेगी। राष्ट्रगान और तिरंगे का सम्मान संवैधानिक दायित्व है।❖

सिक्ख धर्म और गुरूवाणी के प्रति संघ रखता है पूर्ण श्रद्धा एवं आस्था

जालन्धर (विसंकें) सिक्ख भी जैन और बौद्ध की भांति ही एक सामाजिक-धार्मिक मान्यता प्राप्त धर्म है और सिक्खों की एक अलग पहचान है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्पष्टता के साथ सिक्ख धर्म को मानता है और हमेशा से ही सिक्ख धर्म की अलग पहचान को मान्यता देता आया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पंजाब प्रांत के संघचालक बृजभूषण सिंह बेदी ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर ये बात कही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, प्रचार विभाग पंजाब द्वारा मा. बृजभूषण सिंह बेदी जी की ओर से जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि इस विषय पर संघ का दृष्टिकोण तभी स्पष्ट हो गया था, जब 2001 में केंद्रीय अल्पसंख्यक आयोग के तत्कालीन वाईस चेयरमैन सरदार त्रिलोचन सिंह और संघ के माधव गोविंद वैद्य के मधय बैठक हुई थी। संघ के तत्कालीन अखिल भारतीय प्रवक्ता माधव गोविन्द वैद्य ने स. तरलोचन सिंह को लिखित रूप में देकर यह तथ्य पुष्ट किया था कि सिक्ख भी जैन और बौद्ध की भांति भारतीय मान्यता प्राप्त धर्म है।

बृजभूषण सिंह वेदी ने कहा कि यह विषय सर्वविदित होने के बावजूद भ्रामक बयानबाजी के जरिए इन दिनों इस विषय को लेकर संघ के विरुद्ध प्रचार किया जा रहा हैं इसीलिए यह प्रचारित करना कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं राष्ट्रीय सिक्ख संगत सिक्खों के स्वतंत्र रूप को नहीं मानती, तथ्यों के विरूद्ध और भ्रामक है। कहा कि वह सिक्ख समाज के समक्ष इस विषय को पुन: स्पष्ट कर रहे हैं कि सिक्ख एक अलग पहचान के साथ अन्य धर्मो की तरह भारतीय मान्यता प्राप्त धर्म है और संघ की श्री गुरू ग्रंथ साहिब और गुरूवाणी के प्रति पूर्ण निष्ठा और आस्था है।

संघ गुरूवाणी के विश्वव्यापी प्रचार एवं प्रसार में सदैव सहयोगी रहा है। इसीलिए संघ अपने सभी कार्यक्रमों और शाखाओं में भी गुरुओं के प्रकाशोत्सव और सिक्ख धर्म से सम्बन्धित अन्य सभी पर्व एवं त्यौहार श्रद्धा के साथ मनाता है। गुरुओं का बलिदान व सिक्खों ने जो देश, धर्म, व मानवता के लिए किया है, संघ हमेशा उनके आगे नतमस्तक है व रहेगा। ❖

ज्ञानी की जिज्ञासा तो नि:शब्द होती है

आप स्वयं मूल्यांकन करें, जिन त्यौहारों में कोई विशेष रुचिकर करने के लिए नहीं होता उन त्यौहारों का कालांतर में कितना महत्व रह जाता है, वहीं दीपावली जैसे त्यौहार जनसाधाारण द्वारा इसलिए अधिाक उत्साह से मनाए जाते हैं क्योंकि इस त्यौहार की सभी गतिविधियाँ रुचिकर होती है। इसी मूल पर प्रहार करने का एक भयानक षड़यंत्र चल रहा है। हिन्दुओं के त्यौहारों से उनके वह अवयव निकालनें का प्रयास हो रहा है जो उस त्यौहार को उत्सव बनाते हैं जैसे होली से रंग, पानी, दीपावली से पटाखे। इसी की जगह परोसा जा रहा है, भूतों के मुखोटों वाला हेलोवीन, क्रिसमस ट्री वाला क्रिसमस, पटाखों वाला न्युईयर, दिल-टैडी-ग्रीटिंग-चॉकलेट वाला वेलेंटाइन, बैंड वाला फ्रैंडशिप डे इत्यादि। अब इसका निर्णय समाज को करना है वह इस भयानक षड़यंत्र को कितनी गंभीरता से लेता है तथा अपनी स्वावलंबी सभ्यता के संरक्षण हेतु कितने उत्साह से अपनी परम्पराओं पर अडिग रहता है।❖साभार व्हाट्एप मयंक भारद्वाज

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644
Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi
Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190
Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

500 परिवारों ने ली शपथ, अब कोई व्यक्ति न शराब पियेगा न जुआ खेलेगा

सिरमौर के गिरिपार क्षेत्र की कनियाल बिरादरी ने एक अनूठी पहल की है। इस बिरादरी के लोगों ने नशाखोरी के खिलाफ एक बड़ा फैसला लिया है। लगभग 10 हजार की आबादी वाली इस बिरादरी का कोई भी व्यक्ति न तो शराब पीएगा और न ही जुआ खेलेगा। बिरादरी के लगभग 500 परिवारों ने भलौना गांव के शिरगुल मंदिर में शराब न पीने और जुआ न खेलने की शपथ ली है। कनियाल बिरादरी का एक महासम्मेलन विगत-मास उप तहसील हरिपुरधार के भलौना गांव में संपन्न हुआ। सम्मेलन में इस बिरादरी के सैकड़ों लोग एकत्रित हुए। शराब बनाने व पीने पर पाबंदी लगाने के लिए रिटायर्ड प्रिंसिपल बहादुर शर्मा ने सम्मेलन में प्रस्ताव रखा। उपस्थित लोगों ने प्रस्ताव पर सहमति दी व फैसले लागू करने पर मुहर लगा दी। सिरमौर के गिरिपार क्षेत्र में शादी विवाह व अन्य समारोह में शराब परोसे जाने व बकरे काटे जाने की परंपरा है। कोई कितना ही गरीब हो परंपरा को निभाने के लिए वह अपनी जमीन तक बेचने को विवश हो जाता है।

कनियाल बिरादरी के 500 परिवार हैं, जिनकी कुल आबादी लगभग 10 हजार बताई जा रही है। कनियाल बिरादरी का मूल गांव बढोल पंचायत का कुणा गांव है। इस गांव के लोग गिरिपार क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग डेढ़ दर्जन गांव में बसे हुए हैं। मूल गांव कुणा होने के कारण इस बरादरी के लोगों को कुनियाल कहते हैं। इस बिरादरी के लोग रवाणा, बढ़ोल, कांडो, कुणा, नाय, बनवाणी, कफनु, तांदियों, कुकड़ेच, शिलाण, माइला, कालरियां, छछोती, गोंठ, बरवाड़ी, नांडी, भलौना व डोलना समेत 18 गांवों में रहते हैं। काड़ो बढ़ोल निवासी रिटायर्ड प्रिंसिपल बहादुर सिंह शर्मा बताते हैं कि आज की युवा पीढ़ी नशे की गर्त में फंसती जा रही है। शादी व अन्य समारोह में शराब पीने से अकसर मारपीट की घटनाएं होती हैं। कई लोग ऐसे समारोह में जुआ खेलते हैं। सबसे अधिक परेशानियां महिलाओं को होती हैं। उन्होंने महिलाओं से भी इस विषय पर चर्चा की थी। महिलाओं के समर्थन के बाद ही इस प्रस्ताव को सम्मेलन में रखा, जिस पर सभी ने सहमति प्रकट की है। ❖

सतलुज घाटी के तहत छह जिलों में संचालित होगी परियोजना, हिमाचल के लिए 100 मिलियन डॉलर की परियोजना को मंजूरी

विश्व बैंक ने हिमाचल प्रदेश के लिए 100 मिलियन डॉलर की परियोजना को मंजूरी प्रदान कर दी है। सतलुज घाटी के तहत आने वाले प्रदेश के छह जिलों में इस परियोजना को संचालित किया जाएगा। इस परियोजना को आरंभ करने के लिए इन दिनों विश्व बैंक की टीम हिमाचल दौरे पर है जो प्रस्ताव की जमीनी स्तर की हकीकत को जाचने में जुटी है। यह टीम प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करेगी।

हिमाचल प्रदेश के दौरे पर आई विश्व बैंक की टीम में अमेरिका व अर्जेंटीना से सदस्य शामिल हैं। इनमें मार्सिलो एकर्डा जिल, पीयूष कोटिल, एंड्रयू माइकल, उर्वशी नारायण, श्रद्धा व शार्लेना शामिल हैं। जल्द ही इस परियोजना पर कार्य शुरू कर दिया जाएगा। इस परियोजना के लिए मुख्यालय ऊना में स्थापित किया गया है। इसके तहत हजारों लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध होंगे।

इस परियोजना में भूमि कटाव रोकने के साथ पौधे लगाने, उनका संरक्षण करने और वन विभाग को पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत किए जाने की योजना है। किन्नौर, शिमला, मंडी, कुल्लू, बिलासपुर व ऊना जिलों में यह परियोजना शुरू होगी। इसमें ग्रामीण स्तर पर कमेटियों का गठन कर कार्य सौंपा जाएगा। इसमें विदेशी नस्ल के पौधों के विकास के लिए आधुनिक पौधशालाओं को विकसित करने की योजना है। विशेष रूप से कैचमेंट एरिया को बेहतर तरीके से विकसित किया जाएगा। ❖ **साभार: दैनिक जागरण**

गोमाता की रक्षा में निहित है किसान की खुशहाली

वि.सं.कें. शिमला। शिमला के समीपवर्ती जाठिया देवी में क्योंथल सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान संस्था द्वारा मालपूर्णिमा के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत रहे। इस अवसर गोमाता का पूजन करने के बाद गौवंश को यहां की परम्परा अनुसार सजाया गया। उनको फूल मालाऐं डालकर कुंकुम और अक्षत से सुशोभित करके यथोचित पूजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य देवव्रत ने कहा कि आज के दौर में गाय के महत्व को समझना बेहद आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में गाय को ऊंचा स्थान प्राप्त है और इसे माता का दर्जा दिया गया है। उन्होंने आज की व्यवस्था पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि भौतिकवादी और उपभोक्तावादी इस युग में गाय पराई हो गयी है इसके महत्व को लोग भूल गये हैं। उन्होंने कहा कि अगर देश में किसानों की दशा में सुधार करना है तो इसके लिए गाय के महत्व को प्रतिपादित करना होगा। उनका कहना था कि किसानों की समृद्धि गाय की रक्षा पर निर्भर करती है। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे गाय के महत्व को समझकर गाय का पालन करें। भारतीय नस्ल की गाय के माध्यम से देश के किसानों को बचाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि आज वैज्ञानिक गाय और उससे प्रदत्त पदार्थों पर अनुसंधान कर रहे हैं। इस अनुसंधान में दूध, गोबर, गौमूत्र को उन्होंने अद्भुत पाया है। गाय के दूध पीने से शारीरिक विकास के साथ ही प्रखर बौद्धिक विकास भी होता है साथ ही यह अनेक रोगों में रामबाण का काम करता है। औषधियों का सेवन अगर गाय के दूध के साथ किया जाता है तो इससे चमत्कारी परिणाम देखने को मिलते हैं। उनका कहना था कि गाय का गोबर खेतों को उपजाऊ करने में बेहद लाभकारी है वहीं गोमूत्र की सही विधियों को अगर प्रयोग किया जाये तो इससे खेत में हानिकारक कीटनाशकों के छिड़काव की कोई जरूरत नहीं रहती। इस मौके पर उन्होंने गाय के नस्ल सुधार पर काम करने का आग्रह भी किया। इससे पहले राज्यपाल ने कामनापूर्णी गौशाला समिति टूटु में माल-पूर्णिमा, शरद उत्सव और भगवान वाल्मीकि जयन्ती पर आयोजित समरसता दिवस में उपस्थिति दर्ज की। समरसता पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि कोई भी औषधि जाति देखकर काम नहीं करती वह सबके लिए समान रूप से उपयोगी है। ऐसे ही समाज में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है सभी परमात्मा की संतानें हैं। भगवान ने गुण और कर्म के आधार समाज की व्यवस्था के लिए जातिगत सृष्टि रचने की बात की थी न कि जन्म के आधार पर। उन्होंने सभी लोगों से अपील की वे भगवान वाल्मीकि के बताए मार्ग पर चलें जिससे समाज हर प्रकार के भेदों से उपर उठकर एक सशक्त राष्ट्र बन सके। ❖

गुरू नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर विशेष

गुरू नानकदेव जी के प्रकाश धरने से पहले गुरू की शिक्षा के प्रभाव के कारण सब लोग छुआछूत के व्यवहार में रहते थे। उन्हें गांव में बसने की आज्ञा नहीं थी। यहां तक कि प्रभु भक्ति का कोई अधिकार नहीं था। गुरू नानकदेव जी ने भारतीय समाज की ब्राह्मणी वर्णवद्ध की नीतियों को जोरदार शब्दों में खंडन किया और जातियों के संग संबंध जोड़कर वर्ण, जातियां, उपजातियों में बंटे हुए लोगों के दिलों से नफरत खत्म करने के लिए लंगर की व्यवस्था आरंभ की। इसके बाद गुरू जी ने सरोवरों का निर्माण किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए चारों वर्ण एक ही सरोवर में स्नान करें ताकि समाज को छुआछूत तथा ऊंच-नीच जैसे रोगों से मुक्त किया जा सके। गुरूजी ने देखा की समूचा जगत घृणा, कट्टरपंथी, झूठ, पाखंडों, भेदभाव, छुआछूत और पाप में डुबा हुआ है। इस धरती पर मनुष्य जाति को सर्जित करने के लिए सच, प्रेम और शांति प्रसन्नता का मिशन लेकर चल पड़े। श्री गुरू नानकदेव जी ने समूचे जगत में चार उदासियां यानी प्रचारक दौरे किए।

गुरू नानकदेव जी का अलौकिक दृश्य

ये सिद्ध-नाथ घर-बार छोड़कर हठयोग की साधना द्वारा परमानंद की प्राप्ति के लिए कठोर तप करते थे। इसी समय चरपट और लोहारिया आदिनाथ व सिद्धों का गुरू जी से विचार-विमर्श हुआ। चरपट ने गुरूजी से संसार रूपी भव सागर से पार उतरने का उपाय पूछा। गुरूजी ने कहा कि संसार में ऐसे रहो जैसे जल में कमल रहता है और जल पक्षी बहते पानी में तैरते हुए भी नहीं भीगते। आदर्श योग के संबंध में गुरूजी ने कहा-सच्चा योग इसी में है कि पर-स्त्री पर मन न ललचाए और नाम के सिमरण के बिना न तो मन टिकता है और न तृष्णा मिलती है। थोड़ा खाएं, थोड़ा सोएं तत्वों का विचार करें। यह हमारे सहज योग की प्राप्ति है। चौथी उदासी (संवत् 1577) में गुरूजी ने मक्का-मदीना, बगदाद, ईरान, अफगानिस्तान, मुल्तान, डेरा इस्लाइल खान, डेरा गाजीखान, रामपुर, मीरपुर, नपौशहरा, राजनपुर, मिट्ठनकोट आदि स्थानों का भ्रमण किया। काबा मुसलमानों का पवित्र स्थान है। गुरूजी वहां पर रात के समय काबा की तरफ पैर करके सो गए। प्रातः काल जीवण नामक काजी ने क्रोध में आकर गुरूजी को जगाया और अल्लाह के घर के प्रति अनादर दिखाने के लिए गुरूजी को अपशब्द कहे। गुरूजी इससे नाराज नहीं हुए, बल्कि नरम भाव से कहा, कृपया मेरे पैर उस तरफ कर दो, जिस तरफ सर्वव्यापक अल्लाह मौजूद नहीं हैं। काजी ने गुरूजी के चरण पकड़कर उस तरफ कर दिए जिस तरफ काबा नहीं था। काजी ने देखा काबा उसी तरफ घूम गया जिस तरफ गुरूजी के पांव किए थे। इस तरह जब काजी ने गुरूजी के चरण फिर दूसरी तरफ घुमाए, तो काबा फिर उसी तरफ नजर आया। यह अलौकिक दृश्य देखकर काबा के तमाम काजी, हाजी, मौलाना ने इकट्ठे होकर गुरूजी से बहुत प्रश्न-उत्तर किए। सभी पीर-फकीर, काजियों ने गुरू जी के चरण पड़कर क्षमा मांगी। कुछ दिन के बाद जब गुरूजी वहां से चलने लगे, तो बाबा के पीरों ने प्रार्थना करके गुरूजी की एक पादुका निशानी स्वरूप अपने पास रख ली। इस तरह गुरूजी चारों उदासियों में प्रेम भाव से भूले-भटके लोगों को सीधे रास्ते पर लाए और प्रभु भक्ति में जोड़ने का प्रयास किया।❖ **साभार: संगत संसार**

यूजर की जानकारी का सार्वजनिक होने का खतरा

अगर आप सोशल मीडिया उपयोग करते हैं तो यह खबर आपके लिए ही है। इन प्लेटफॉर्म्स पर निजी डेटा साझा करना खतरनाक हो सकता है। गोपनीयता और सुरक्षा के दावों के बावजूद आपकी निजी जानकारी सार्वजनिक हो सकती है। ऐसा ही एक वाकया पेरिस की एक महिला के साथ हुआ है। फ्रेंच जर्नलिस्ट जूडिथ डिपोर्टेल ने मार्च में टिंडर से यूरोपियन यूनियन डेटा प्रोटेक्शन कानून के तहत अपने निजी डेटा की मांग की थी। उन्होंने पूछा था कि आपके पास मेरा कौन-कौन सा डेटा है? जवाब 800 पन्नों में मिला, जिसमें जूडिथ की हर वो जानकारी थी, जिसे उन्होंने बेहद सीक्रेट समझा था। इसमें उनके पहले स्वाइप, चैट, निजी तस्वीरें और गोपनीय बातें तक सब कुछ मौजूद था। जूडिथ बताती हैं, 'इनमें मेरे फेसबुक लाइक से लेकर, तस्वीरें, शिक्षा और मैं किस उम्र के लोगों से मिलना चाहती हूं, ये सब बातें शामिल थीं। इसके बावजूद टिंडर ने मुझे हर वो बातचीत भेजी जो मैंने अपने मैच के साथ की थी। कई अनुभव खराब भी रहे, जिन्हें मैं भूल चुकी थी। लेकिन टिंडर ने एक भी बातों को नहीं भुलाया। उसके पास सारी जानकारी सेव थी मैं वर्चुअल दुनिया में वैसी ही मौजूद हूं, जैसी शारीरिक तौर पर। मुझसे ज्यादा जानकारी टिंडर के पास है। कई चीजें मैं भूल चुकी हूं, लेकिन टिंडर नहीं भूला। मेरी तरह आपकी गोपनीय बातें भी टिंडर के पास सेव होंगी।'

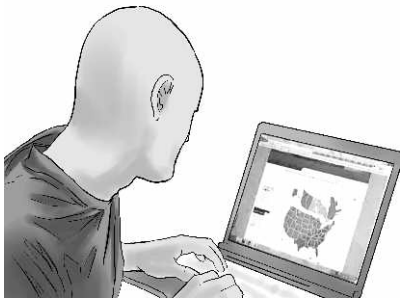

फेसबुक पर ऐसे देखें अपना डाटा

अगर आप फेसबुक पर हैं, तो अब तक की सभी एक्टिविटीज देख सकते हैं। इसके लिए आपको फेसबुक से रिक्वेस्ट करने की जरूरत नहीं है। आप सेटिंग्स में जाकर डाटा की कॉपी डाउनलोड कर सकते हैं। इसमें अब तक देखे विज्ञापन, लाइक, शेयर, स्टेटस, आईपीएड्रेस, एप, चेक-इन जैसी सभी जानकारी मौजूद हैं।

भारत में टिंडर के 10 लाख यूजर्स

डेटिंग एप टिंडर के दुनिया भर में 5 करोड़ से ज्यादा यूजर्स है। इनमें से 10 लाख यूजर्स भारत में भी हैं। एक रिसर्च के मुताबिक मौजूदा दौर में 18-35 साल के आधे से ज्यादा युवा दिन के 24 में से 12-13 घंटे का समय सिर्फ सोशल मीडिया पर व्यर्थ बरबाद कर देते हैं। नए दोस्त बनाना हो या अपने लिए सामग्री ढूंढना बस कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और एप्स के जरिए आसान हो गया है। लेकिन इससे आपकी कई निजी और गोपनीय बातों के सार्वजनिक होने का खतरा भी है।❖ **साभार: दैनिक भास्कर**

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

चुनावी दंगल में मतदाताओं की भागीदारी

-पुष्कर सगदेव

चुनाव प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। देश में जो प्रशासनिक व्यवस्था है वह चुनाव प्रक्रिया का ही एक हिस्सा है। राज्यों में जब भी कोई उथल-पुथल होती है या नागरिकों को जितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उसके लिए जनता चाहती है कि जल्दी से जल्दी चुनाव हों और भ्रष्ट नेताओं को बदलकर ईमानदार एवं कर्मठ नेता का चुनाव करके प्रशासन को और सुदृढ़ बनाया जाए। प्रशासन सुदृढ़ बने और चुनी गयी सरकार जनता के हितों के लिए काम करे, यह तभी सम्भव है जब देश के शत् प्रतिशत मतदाता अपना मतदान करें। परन्तु विधानसभा के लिए कुल मिलाकर 50 से 55 प्रतिशत और लोकसभा के लिए तो 30 से 35 प्रतिशत ही मतदान होता है। पिछले कुछ चुनावों में इन आंकड़ों में थोड़ा सुधार अवश्य हुआ है, परंतु फिर भी मतदाताओं को अपने मतदान के अधिकार के प्रति और जागरूक होना होगा।

विश्वास की कमी मुख्य कारण- जनता के मन में चुनाव प्रक्रिया और प्रशासन में विश्वास का न होना एक मुख्य कारण है। जो नेता अपना विश्वास खो बैठे उसे पुन: स्थापित करने के लिए दलों के पास बुद्धिजीवी प्रतिनिधि नहीं हैं। जो प्रतिनिधि बनना चाहते हैं वे या तो घिसे-पिटे चेहरे हैं या फिर धनी व्यक्ति चुनाव लड़ना चाहते हैं। इसमें क्षेत्र और मोहल्ले के भ्रष्ट और बदमाश लोग उनकी मदद करने में लगे रहते हैं। इसलिए पढ़े-लिखे, बुद्धिजीवी, धनी और अधिकृत कॉलोनी में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं जाते। क्योंकि उन्हें लगता है कि चुनाव प्रक्रिया अब बेईमानी का खेल बन कर रह गया है। लोगों की यह सोच बिलकुल सही है।

कम मतदान से मिलता है भ्रष्टाचार को बढ़ावा-

अक्सर चुनावों में कम मतदान होने से भ्रष्ट नेता चुनकर आता है और आगे वह भ्रष्ट बन कर ही काम करता है। ऐसे भ्रष्ट नेताओं पर दबाव डालने के लिए अधिक से अधिक मतदान करने की आवश्यकता है। भ्रष्ट नेता 'अ' पार्टी का भी है और 'ब' पार्टी का भी है। झुग्गी-झोपड़ी और गरीबी रेखा से नीचे घोषित किये गए लोग ही उन्हें चुनकर लाते हैं। इसलिए वे नेता उन लोगों के लिए ही काम करते हैं, वे जानते हैं कि वे इसलिए चुनकर आये हैं क्योंकि झुग्गी-झोपड़ी के लोगों ने उन्हें वोट दिया है।

इसलिये उनकी सोच बदल जाती है और फिर वह बिना किसी दबाव के काम करते हैं जिसमें फंड का दुरुपयोग करना, अपराधियों को सुरक्षा देना व उनका बचाव करना, जो लोग उनके चुनाव के लिए काम आये थे उनकी आर्थिक व सरकारी मदद करना शामिल हैं। फिर वह नेता पूरे क्षेत्र पर ध्यान नहीं देते हैं। ऐसे नेताओं की कार्य पद्धति बदलने के लिए जब तक क्षेत्र के सभी लोग मतदान नहीं करेंगे तब तक प्रशासन बदल नहीं सकता।

अवश्य करें मतदान- हम सभी को अपने मतों का प्रयोग करके चुनाव को शत् प्रतिशत बदलने का प्रयास करना चाहिए। जिस पार्टी का जो नेता आप चाहते हैं उसे आप वोट डालिये। वे सभी नेता देश के नागरिक हैं और चुनाव आयोग से मान्यता प्राप्त हैं इसलिए उस क्षण तक वे जनता के प्रतिनिधि हैं उन पर किसी प्रकार का आरोप या प्रत्यारोप नहीं लगा सकते।

आपका कीमती वोट किसी भी नेता का मूल्यांकन कर सकता है। जो पार्टी, जो नेता आप चुनेंगे वो जीत कर आएगा और यदि शत् प्रतिशत वोटिंग की जाती है तो उस जीते हुए प्रतिनिधि की सोच बदल सकती है और वह हर क्षेत्र के हर व्यक्ति के लिए काम कर सकता है, जैसे कि बिजली, पानी, सुरक्षा, शिक्षा, पेंशन, बाग-बगीचे, सड़कें, आदि-आदि।

चुनाव प्रक्रिया को त्रुटिपूर्ण समझकर चुनाव के दिन घर में ही रहने का प्रयास न करें। अपितु परिवार के साथ घर के बाहर निकलकर अपना कीमती वोट डालें और चुनाव प्रक्रिया को सफल बनाएं। ❖

परिचर्चा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत के नागपुर में विजयादशमी के अवसर पर दिये गये उद्‌बोधन पर शिमला के लैण्डमार्क होटल में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में रा.स्व. संघ पश्चिम क्षेत्र राजस्थान के संघचालक और पैसेफिक विश्वविद्यालय के कुलपति व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. भगवती प्रसाद शर्मा मुख्य वक्ता रहे। उनके इस वर्ष के उद्‌बोधन में देश, समाज व नागरिकों से संबंधित महत्वपूर्ण 80 विषय आए हैं। उन्होंने कहा कि 21 सित. 2014 को संयुकक्त राष्ट्र संघ में योग पर 177 देशों ने भारत का सह प्रायोजक बनने का निर्णय लिया। हमारे प्राचीन वाँग्मय में वर्णन किया गया है कि आधी घटी दीर्घ श्वास से आयु बढती है। तनाव से कम होती हुई आयु के विषय पर उन्होंने कहा कि तनाव से शरीर के टेरोमर्स बढ रहे हैं, लेकिन 12 मिनट में डीप ब्रीदिंग से टेलोमर्स कम होते हैं। सेवानि. सेशन जज रवीन्द्र प्रकाश वर्मा ने एल्युमीनियम फॉस्फाइड के रूप में जो जहर घरों में है उसकी रोक के विषय में सुझाव दिए।

सेवानि. प्रसाशनिक अधिकारी जे.एस. राणा ने सुरक्षा सशक्तिकरण, लघु व कुटीर उद्योगों व कश्मीरी हिंदुओं की वापसी के विषय में सझाव दिए हि.प्र.वि.वि से डॉ. गुरूप्रिया कपूर ने जनसंख्या का विषय एवं अवैध रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों की कड़ाई से म्यांमार वापसी का सुझाव दिया प्रसिद्ध किसान व बागवान रामलाल ने फसलों की मूल्यीकरणाली एवं उचित भंडारण की व्यवस्था का सुझाव दिया। सेवानि. एडीजीपी केसी सडयाल ने राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति राजनीतिज्ञों के एटिट्यूड में दृढता पर जोर देने की बात कही। डॉ. शशिकाँत शर्मा हि.प्र.वि.वि. ने नई पीढी, को भूगोल, हमारी संस्कृति की जानकारी, त्यौहार, पीपल का पेड़ व छत्तीसगढ़ सरकार के सहयोग पर जानकारी दी एवं इसके क्रियान्वयन के तरीके बताए। एक सहभागी ने शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो, गरीबों को शिक्षा की समुचित व्यवस्था, गरीब तबके को बीपीएल से कौशल विकास को एजुकेशन से जोड़ा जाए, कानून व्यवस्था सुधार- सिविल लॉ और क्रिमिनल लॉ में भी सुधार हो यह भी सुझाव आया। यह भी सुझाव आया कि गोशाला दान सुविधा, वृद्धाश्रम से वृद्ध और गौशालाओं से गौ को वापस किया जाए। एसजेवीएन के चेयरमैन व महाप्रबंधक नन्दलाल शर्मा ने भी अपने सुझाव दिए। वरिष्ठ पत्रकार राकेश लोहमी ने कहा कि डोकलाम में अस्थाई विराम हुआ, हम अपनी सैन्य शक्ति बढाएं।

डीएवी स्कूल सेन्ट्रल मैनेजमेन्ट कमेटी के सदस्य बीपी गुप्ता ने कसौली लिटफेस्ट के द्वारा फैलाए जा रहे नकारात्मक वातावरण पर जानकारी दी एवं कहा कि भारत का इकोनॉमिक एजेण्डा प्रभावी हो, एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिवटी झाने व डिवैल्युएशन आफ रुपी करना पड़ेगा। सेवानि. मेजर जनरल सीएम शर्मा ने भविष्य की पीढ़ी को नैतिकता व भारतीय मूल्यों की जानकारी के विषय में कहा और कि केन्द सरकार का सफाई अभियान अच्छा है इस पर जोर दिया जा। अंत में डॉ. भगवती प्रसाद शर्मा जी ने कहा कि ये सभी सुझाव तो सरकार के स्तर पर ही लागू किये जा सकते हैं। संघ का कार्य तो राजनीति और सरकार से भिन्न है। ❖

विद्यार्थी परिषद का मतदाता जागरूकता अभियान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा हिमाचल प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनावों में मद्देनजर 27 अक्टुबर से 5 नवम्बर तक एक मतदाता जागरूकता अभियान का आयोजन किया जा रहा है। वद्यिार्थी परिषद की प्रदेश मंत्री हेमा ठाकुर ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अभियान में प्रदेश भर में विभिन्न स्थानों पर 6 यात्राएं निकाली जाएंगी जिसमें 5 लाख करपत्र वितरित किया जाएंगे। शिमला के अतिरिक्त जिला मजिस्टेट ने इस हेतु विद्यार्थी परिषद को एक लिखित अनुमति पत्र जारी किया है। शिक्षा का बाजारीकरण, शिक्षा के क्षेत्र में ट्रांस्फर माफियाराज, शिक्षा में आकंठ भ्रष्टाचार, यूनिवर्सिटी व कॉलेज में छात्र परिषद गठित करने आदि विद्यार्थियों से सम्बन्धित विषयों के निराकरण हेतु विद्यार्थी परिषद पूरे प्रदेश में विद्यार्थियों के बीच जाकर स्कूलों, महाविद्यालयों एवं पेशेवर कॉलेजों में भी मतदाता जागरूकता अभियान में सहयोग देंगे। साथ ही छात्र-छात्राओं द्वारा सम्पूर्ण प्रदेश में शत प्रतिशत मतदान के लिए स्थान-स्थान पर नुक्कड़ नाटक, जागरूकता अभियान एवं गृह सम्पर्क करने की योजना भी बनाई गई है। ❖

शिमला के रोटरी टाउन हॉल में महिला समन्वय गोष्ठी

गत दिनों राजधानी शिमला के रोटरी टाउन हॉल में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी निभाने वाली महिलाओं व मातृशक्ति की एकदिवसीय गोष्ठी आयोजित की गई। इस गोष्ठी में मुख्य रूप से अखिल भारतीय महिला समन्वय प्रमुख सुश्री गीता ताई गुंडे व राष्ट सेविका समिति की प्रांत संचालिका श्रीमती राजकुमारी सूद उपस्थित रहीं।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से अपने प्रदेश में चलने वाली विभिन्न प्रशासनिक, सामाजिक, शैक्षिक व अन्य गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा की गई। इन क्षेत्रों में काम करते समय आने वाली कठिनाईओं व जटिलताओं के विषय पर समाधान व सुझावों के लिए विभिन्न वक्ताओं ने अपना सहभाग प्रस्तुत किया। अपने प्रदेश की स्त्री शक्ति का उसके स्व के प्रति बोध एवं जागरूकता से सामाजिक सरोकार के विभिन्न विषयों में सहभागिता बढ़े इस पर भी विचार किया गया। इस सम्बन्ध में गीता ताई गुंडे ने कुछ सुझाव व समाधान टिप्स भी दिये। सम्पूर्ण देश में अन्य राज्यों में सक्रिय कार्य करने वाली स्त्रियों का भी उदाहरण दिया। उन्होंने कहा पर्वतीय क्षेत्र की महिलाएं सामाजिक सरोकार के विषयों में अपनी सक्रिय भागीदारी बखूबी रूप से निभा रही हैं। कार्यक्रम में शिमला जिले के विभिन्न स्थानों से प्रशासनिक, शैक्षिक, अधिवक्ता, सामाजिक कार्यकर्ती एवं विभिन्न धार्मिक व राजनीतिक क्षेत्र से जुड़ी हुई 50 महिलाओं की उपस्थिति रही।❖

दृढ़ संकल्प से सिद्धि

सभी पर्वों में छिपा स्वच्छता का संदेश
चप्पा चप्पा होगा स्वच्छ तभी आगे बढ़ेगा देश।
जड़ हर बीमारी की होती है यही गंदगी
पूर्ण स्वच्छता बिना नहीं हो सकती कोई बंदगी।
तन-मन होंगे स्वच्छ तो बुलन्द होंगे विचार
हरियाली को धरा स्वच्छ तो बने सुंदर संसार।
साफ-सुथरा हो कोना-कोना लेना होगा ये संकल्प
स्वस्थ जीवन पाने का है बचा यही विकल्प।
त्याग आलस्य खुद भी दूसरों को हम जगायें
स्वस्थ सुंदर हो भारत, जी जान से जुट जाएं।
बहुत हुआ, निजात अब तो गंदगी से पायें
आओ मिलकर हम सभी देश अपना चमकाएं।
गर्व हो जिस पर सभी को ऐसा हिन्दोस्तां बनाएं
स्वच्छता में दुनिया के नक्शे पर अव्वल आएं।
गांधी जैसे महापुरूषों ने भी पाठ यही पढ़ाया
जरा सी गंदगी का भी न पड़े जीवन पर साया।
सूरज सा चमके वतन अब छोड़ दो हर बहाना
अनपढ़ जाहिल को ही पड़े बार-बार समझाना।
अपना न्यू इंडिया का मिलकर होगा साकार
जड़ें जमा न पाएं अब हिंसा गंदगी भ्रष्टाचार।
कितने भारत मां के हैं हम पर ऋण उपकार
नमन उन्हें जो जां देने को रहते हर पल तैयार।
हर देशवासी सबक ये अपने भीतर ले उतार
मंत्र स्वच्छता का है स्वस्थ जीवन का आधार।
गंदगी-प्रदूषण से मुक्ति ही होगी सच्ची आजादी
ठान लें नामुमकिन नहीं गर इरादे हों फौलादी।
लहर चली भारत भूमि में हर लब पे यही तराना हो
ऐसा रूप संवारें इसका धरती पर ज्यों नजराना हो।
दाग गंदगी का बना दे हर तस्वीर भद्दी
बदलो अब चूके तो अमूल्य जीवन होगा रद्दी।
मंजिल पाते हैं वही जोखिम जोश जुनून के जिद्दी
विग थम जाते हैं तूफां भी मिलती दृढ़ संकल्प से सिद्धि।

मुकेश विग, ठोडो ग्राउंड, सोलन

माँ

माँ! तुम कैसी हो?
न तुम उसके जैसी हो।
जैसा मैने सोचा था,
तुम तो बिल्कुल वैसी हो।।
प्यार अनोखा, सौन्दर्य अनोखा,
श्रृंगार प्रकृति के जैसा है।
रूप है सुन्दर, हरित के अन्दर,
मन में न कुछ ऐसा-वैसा है।।
माँ! तुम कैसी हो?
न तुम उसके जैसी हो।
जैसा मैने सोचा था,
तुम तो बिल्कुल वैसी हो।।
शब्दों के झंकार से तुम्हारा जगाना,
विरह से पीड़ित नीर बहाना।
दुलार हमेशा ही जताना,
लोग मारते फिर भी ताना।।
माँ! तुम कैसी हो? न तुम उसके जैसी हो।
जैसे मैंने सोचा था, तुम तो बिल्कुल वैसी हो।
वाणी में मीठा-मीठा अमृत,
सुनकर बालक हो जाता विस्मृत।
लगता जैसे हिन्दी में संस्कृत ,
तन-मन सब हो जाए झंकृत।।
माँ! तुम कैसी हो? न तुम उसके जैसी हो।
जैसा मैंने सोचा था, तुम तो.....
ममता की हो सच्ची मूरत,
फिर भी न दिखती है सूरत।
तुम करूणा और दया की देवी,
तू तो भोली-भाली है मां।।

खुशीराम ठाकुर, लक्कड़ बाजार बरोट, मण्डी।

आर्गेनिक फार्मूले से फाइव लेयर फार्मिंग तकनीक

पीएमटी में एमबीबीएस की बजाय बीडीएस मिलने के बाद मेडिकल क्षेत्र में जाने का विचार छोड़ सागर के आकाश चौरसिया फसलों के डॉक्टर बन गए। उन्होंने अपने तीन एकड़ के खेत को आदर्श फार्म हाउस में तब्दील कर दिया। गर्मी के सीजन में एक साथ पांच फसलें लेकर परंपरागत किसानों के लिए नजीर पेश की है। फाइव लेयर फार्मिंग के साथ जैविक खेती, गाय के गोबर से केंचुआ खाद, गोमूत्र से दवाएं व कीटनाशक तैयार किया है।

बदल गया विचार

सागर के तिली वार्ड निवासी आकाश चौरसिया का 2010 पीएमटी में सिलेक्शन हुआ। पसंदीदा एम.बी.बी.एस. की जगह बी.डी.एस. मिलने पर मेडिकल प्रोफेशन में जाने का विचार छोड़ खेती की तरफ मुड़ गये। उन्होंने परम्परागत खेती को जैविक खेती में तब्दील कर मल्टीलेयर फार्मिंग इन्ट्राक्रॉप फसलें उगाना शुरू कर दिया।

गोमूत्र, गोबर और केंचुआ खाद

परंपरागत तरीकों और फसल चक्र के विपरीत आकाश साल भर मल्टीलेयर फार्मिंग से मुनाफा उठा रहे हैं। उन्होंने पौधों का कुपोषण कम करने और मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाने पर काम किया है। गोबर से बनी केंचुआ खाद, कचरे से खाद, केंचुए के शरीर से निकलने वाले एसिड और एन्जाइम से बना अर्क गोमूत्र-छाछ और पत्तियों से बनाये गये देशी कीटनाशक तथा दवाओं का उपयोग करते हैं। गाय के गोबर से 32 प्रकार की खाद बनाते हैं।

ऐसे तैयार करते हैं खेत

खेत में देशी ग्रीन हाउस बना है। कीट-पतंगे अन्दर नहीं जा सकते। हवा के साथ खरपतवार के बीज खेत के अन्दर नहीं पहुंच सकते। जमीन के अन्दर अदरक, साग भाजी जिनमें पालक, चौलाई, मेथी, राजगीर आदि। तीसरी लेयर में बेल वाली फसल जिनमें करेला, कुंदरू, परवल, टिंडा जैसी फसलें। चौथी लेयर में बड़ पत्ते वाली फसलें जिनमें ककड़ी, कद्दू या अन्य फसल जो ग्रीन हाउस के ऊपर उगती है। पांचवी लेयर में पपीता जैसी फसल उगाते हैं। एक साथ सब्जी, अनाज, फल व दलहन भी लगाये जा सकते हैं।

जैविक खाद के साथ अर्क

आकाश चौरसिया अपने खेत में जैविक खाद, केंचुआ खाद तैयार करते हैं इससे पौधों का कुपोषण दूर किया जाता है।

❖ साभारः सेवा संवाद

तंबाकू व घास से तैयार किया जैविक कीटनियंत्रक

कानपुर स्थित दयानंद गर्ल्स डिग्री कॉलेज की जीव विज्ञान की प्रोफेसर डॉ. सुनीता आर्य ने दूब घास, तंबाकू, कंडों की राख और मैदा की सहायता से ऐसे जैविक कीटनाशक तैयार किए हैं जो केवल हानिकारक कीटों को मारेंगे। विशेषता है कि इस पारम्परिक ज्ञान को वैज्ञानिक परीक्षण के बाद प्रकृति भारती शिक्षण एवं शोध संस्थान में प्रमाणित किया गया है। प्रो. सुनीता आर्य ने बताया कि दूब घास व तंबाकू को सुखाकर पहले उसका पाउडर बनाया जाता है। फिर उसे मिट्टी के बर्तन में पानी के साथ दो-तीन दिनों तक सड़ाया जाता है। सूखे हुए 500 ग्राम पाउडर को 25 लीटर पानी में डालकर सड़ाते हैं। यह एक ऐसी क्रिया है जो एक निश्चित तापमान एवं छांव में की जाती है। इसके बाद मिश्रण को छान लेते हैं और कीटनाशक तैयार हो जाता है। इसके अलावा गौमूत्र, कंडे की राख व मैदा को मिलाकर भी कीटनाशक बनाया गया। जिसका प्रयोग भी सफल रहा है। उन्होंने बताया कि इस कीटनाशक के प्रयोग से फल व सब्जी की फसलों को सफेद मक्खी, निचलीबग, कैअर फिलर, फाफिड जैसे कीट चट नहीं कर सकेंगे। इसका प्रतिकूल प्रभाव भी नहीं पड़ेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि इस नई तकनीक का लाभदायक कीटों पर कोई असर नहीं होगा। प्रो. आर्य ने कानपुर देहात समेत आसपास के गांवों में टमाटर, बैंगन व लौकी में यह प्रयोग किया जो सफल रहा। ❖ साभारः अवध प्रहरी (पाक्षिक)

हरे पालक के अद्भुत स्वास्थ्य लाभ

आमतौर पर पालक को केवल हीमोग्लोबिन बढ़ाने वाली सब्जी माना जाता है। बहुत कम लोग जानते हैं कि इसमें इसके अलावा भी बहुत से गुण विद्यमान हैं। पालक में कैलोरी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, फाइबर और खनिज लवण होता है। साथ ही पालक में विभिन्न खनिज लवण जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन तथा विटामिन ए, बी,सी आदि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

खून की कमी दूर करें:

पालक में आयरन की मात्रा बहुत अधिक होती है और इसमें मौजूद आयरन शरीर आसानी से सोख लेता है। इसलिए पालक खाने से हीमोग्लोबिन बढ़ता है। खून की कमी से पीड़ित व्यक्तियों को पालक खाने से काफी फायदा पहुंचता है।

शरीर को बनाए मजबूत:

पालक में मौजूद फ्लेवोनोइड्स एंटीआक्सीडेंट का काम करता है। यह तत्व रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करने के अलावा हृदय संबंधी बीमारियों से लड़ने में भी मददगार होता है। इसमें पाया जाने वाला बीटी कैरोटिन और विटामिन सी क्षय होने से बचाता है। सलाद में इसके सेवन से पाचनतंत्र मजबूत होता है और यह भूख बढ़ाने में सहायक होता है।

रूखापन दूर करें:

पालक त्वचा को रूखा होने से बचाता है। साथ ही चेहरे के कील मुहांसे मिटाने और त्वचा को स्वस्थ रखने में मददगार होता है। पालक का पेस्ट बनाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे से झाइयां दूर हो जाती हैं।

गर्मी से राहत:

गर्मी से होने वाले नजले, सीने और फेफड़े की जलन में भी यह लाभप्रद होता है। साथ ही पित्त को शांत करता है और गर्मी के कारण होने वाले पीलिया और खांसी में भी बहुत लाभदायक होता है।

हृदय रोग में लाभ:

पालक का सेवन करने से हृदय रोग में भी फायदा होता है। इसके लिए आधा चम्मच चौलाई का रस, एक चम्मच पालक का रस और एक चम्मच नींबू का रस तीनों को मिलाकर सुबह नियमित रूप से सेवन करने से हृदय रोगी को लाभ होने लगेगा।

पाचन तंत्र के रोग दूर करें:

आधा गिलास कच्चे पालक का रस सुबह उठकर नियमित रूप से पीने से कुछ ही दिनों में कब्ज की समस्या दूर हो जाती है। आंतों में रोगों में पालक की सब्जी खाने से लाभ मिलता है। साथ ही पालक के पत्तों का काढ़ा बनाकर पीने से पथरी पिघल जाती है और पेशाब के रास्ते इसके कण बाहर निकल जाते हैं।

आंखों के लिए लाभकारी:

पालक आंखों के लिए काफी अच्छा होता है। इसके सेवन से आंखों की रोशनी बढ़ती है। ऐसे लोग जो रतौंधी से परेशान है और उन्हें हल्के प्रकाश में स्पष्ट दिखाई नहीं देता उनके लिए पालक किसी चमत्कार से कम नहीं होता है।

त्वचा की समस्या में लाभकारी:

पालक झाइयां और झुर्रियों को दूर करने में भी आपकी मदद करता है। इसके लिए पालक और नींबू के रस में कुछ बूंदे ग्लिसरीन की मिलाकर सोते समय त्वचा पर लगाने से लाभ होता है।

आर्थराइटिस में फायदेमंद:

शरीर के जोड़ों में होने वाली बीमारी जैसे आर्थराइटिस, ओस्टियोपोरोसिस की भी संभावना को भी घटाता है। साथ ही जोड़ों के दर्द को दूर करने में भी सहायक होता है। जोड़ों के दर्द से राहत पाने के लिए पालक, टमाटर और खीरा आदि सब्जियों को सेवन करना चाहिए या इनका सलाद बनाकर खाना चाहिए। ❖ **साभार: ओन्ली माय हैल्थ**

प्लेसमेंट पूर्व तैयारियां करने से सफलता की संभावना ज्यादा

कम छात्रों को ही प्लेसमेंट ऑफर मिल पाता है। इसके कई कारण हैं, लेकिन यदि इसकी पहले से तैयारी की जाए तो यह हासिल करना आसान हो सकता है। प्लेसमेंट का सीजन जल्द ही शुरू होने वाला है, लेकिन क्या आप इसके लिए तैयार हैं। वे छात्र, जो कॉलेज के अंतिम वर्ष में हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्लेसमेंट ऑफर हासिल करने में वे अपना 100 प्रतिशत दें। कैंपस में प्लेसमेंट में आमतौर पर ऐसी कंपनियां आती हैं, जो छात्रों की पसंदीदा होती हैं। इसलिए बेहतर है कि इसके लिए पहले से तैयारी की जाए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार 2017 के दौरान सिर्फ 40 फीसदी इंजीनियरिंग छात्रों को प्लेसमेंट मिला। इसे बदलने की आवश्यकता है। एआईसीटीई ने तकनीकी संस्थानों में इंटर्नशिप को अनिवार्य बनाया है। आपको इन कंपनियों के समक्ष अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा। आइए जानते हैं कि इसके लिए छात्र क्या कर सकते हैं।

रिज्यूमे और कवर लेटर

रिज्यूमे आपके एकेडमिक्स और अनुभव का आइना होता है, जबकि कवर लेटर आपकी आगे की क्या योजना है, इसके बारे में बताता है। यह सुनिश्चित करें कि आपका रेज्यूमे अच्छा और स्पष्ट लिखा हो। इसमें वर्तमान काम या कोर्स की जानकारी होनी चाहिए और इसके बाद पहले की जानकारी दी गई हो। यह एकेडमिक्स, लीडरशिप/एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज, वर्क एक्सपीरियंस और इंटरेस्ट जैसे सेक्शन में बंटा होना चाहिए। इसके बाद आप जॉब प्रोफाइल के आधार पर इसे कस्टमाइज कर सकते हैं।

स्किल सेट मैच करना

एक बार जब आप कंपनी और जॉब प्रोफाइल के बारे में रिसर्च कर लें, तो अपने मजबूत और कमजोर पक्षों की सूची बनाएं। अपने मजबूत पक्षों के अनुसार रेज्यूमे में स्किल सेट को शामिल करें। इसमें एडिशनल कोर्स जैसे एक्सेल ट्रेनिंग, कोडिंग या फॉरेन लैंग्वेज को शामिल कर सकते हैं। इससे आपको जॉब के लिए वरीयता मिलने की संभावना बढ़ जाएगी। अपने स्किल सेट को जॉब से मिलाने की कोशिश करें।

संपर्क में बने रहना

प्लेसमेंट की प्रक्रिया इंटरव्यू पर ही खत्म नहीं होती है। रिक्रूटर से उनका बिजनेस कार्ड मांगना न भूलें। इंटरव्यू के बाद रिक्रूटर को थैंक्स मेल करें। यदि मुमकिन हो तो फीडबैक भी ले सकते हैं। प्रक्रिया पूरी होने के बाद भी उनसे संपर्क में बने रहने की कोशिश करें। इससे यह लगेगा कि आप जॉब को लेकर गंभीर और इच्छुक हैं।

प्लेसमेंट के पहले अच्छे से प्रैक्टिस कर लें

प्रैक्टिस से ही परफेक्शन आता है। इंटरव्यू में जाने से पहले इसकी प्रैक्टिस कर लें। यह आप किसी दोस्त, सीनियर के साथ कर सकते हैं। मॉक इंटरव्यू से आपको वास्तविक इंटरव्यू के बारे में बेहतर समझ मिलेगी। इससे आपको अपने उत्तर को और बेहतर बनाने, आत्मविश्वास बढ़ाने और तनाव को कम करने में मदद मिलेगी। मॉक इंटरव्यू से आपको बॉडी लैंग्वेज पर काम करने का मौका मिलेगा। कुछ मामलों में कंपनियां असेसमेंट भी करती हैं। इसके लिए कई प्रकार के ऑनलाइन टेस्ट मौजूद हैं। इसलिए वास्तविक इंटरव्यू से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आपकी तैयारी पूरी हो। ❖

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के अन्तर्गत शुभ सूचना

पांगी गांव के सर्व साधारण से विनम्र निवेदन है कि जिनकी बेटियां (बालाएं) उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने हेतु किन्नौर में या कहीं बाहर अन्य स्थानों पर महाविद्यालय या विश्वविद्यालय अथवा किसी प्रशिक्षण संस्थान में शिक्षा ग्रहण कर रहे हों और वे यदि एच0ए0एस0 अथवा आई0ए0एस0 की परीक्षा देना उचित समझते हों तो उन्हें मेरी ओर से निःशुल्क पचास हजार (50000/-) रूपये और आई0ए0एस0 के लिए एक लाख रूपये (100000/-) बतौर प्रोत्साहन राशि प्रविष्टीकरण के समय दिया जायेगा। परिवार वाले उनसे इस बारे में विचार-विमर्श करें।

यह बात में स्पष्ट करना चाहूंगा कि यह स्थिति दिनांक 31/12/2018 तक बरकरार रहेगी। जाति भेद का कोई प्रश्न ही नहीं। चाहे वह किसी भी वर्ण अथवा जाति का हो। यह राशि डिग्री परीक्षा की सारी कार्यवाही (Formalities) पूरी कर लेने के उपरान्त प्रधान महोदय सम्बन्धित ग्राम पंचायत के माध्यम से बजरिया चैक अदा किया जावेगा। इस राशि को बतौर ऋण/लोन न समझें यह केवल प्रोत्साहन राशि है। बाद में इसे लौटाने की आवश्यकता भी नहीं है। इच्छुक व्यक्ति मुझसे सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करें।❖

नारी अस्मिता व अस्तित्व के प्रश्न

मेरा विशेषकर सभी महिला वर्ग से कर-बद्ध अनुरोध है कि इस सुविचार पर ध्यान देने की कोशिश और मनन करने का यत्न करें। मुझे पूरा विश्वास है कि यह बुरी आदतों का निश्चयात्मक सुधारक है।

बदलते परिवेश में आधुनिक महिलाओं के लिए यह आवश्यक है कि मैथिली शरण गुप्त के इस वाक्य- ''आंचल में है दूध'' को सदा याद रखें और भ्रूण हत्या जैसा घिनौना कृत्य कर मातृत्व पर कलंक न लगाएं बल्कि एक ऐसा सेतु बने जो ढहते हुए को जोड़ सके, रूकते हुए को मोड़ सके और गिरते हुए को उठा सके। नन्हें उगते अंकुरों और पौधों में आदर्श जीवन शैली का सिंचन दें ताकि वे शतशाखी वृक्ष बन कर अपनी उपयोगिता साबित कर सकें। जननी एक ऐसे घर का निर्माण करें जिसमें प्यार की छत हो, विश्वास की दीवारें, सहयोग के दरवाजे, अनुशासन की खिड़कियां और समता की फुलवाड़ी हो। उसका पवित्र आंचल सबके लिए स्नेह, सुरक्षा, सुविधा, सुख और शान्ति का आश्रय-स्थल बने ताकि इस सृष्टि में बलात्कार, गेंगरेप, नारी उत्पीडन जैसे शब्दों का अस्तित्व ही समाज से हमेशा-हमेशा के लिए मिट जाए।❖ **ललित गर्ग स्वतंत्र पत्रकार**

मस्जिद से ऊंची आवाज पर वेनिस के मेयर का आदेश विवादित

इटली के वेनिस शहर के मेयर लुइगी ब्रूगनारो ने एक विवादित आदेश जारी किया है, शहर के प्रसिद्ध सैंट मार्क्स स्क्वॉयर पर किसी ने भी अगर अल्लाहो अकबर चिल्लाया और रोकने पर भी नही रूका तो उसे गोली मार दी जाएगी। लुइगी ने यह भी कहा, कि हम अपने गार्ड को सतर्क रहने को कहेंगे। यदि कोई भी सेंट मार्क्स स्कवॉयर की तरफ दौड़ते हुए जाएगा और अल्लाहो अकबर चिल्लाएगा, वे उसे मार गिराएंगे। एक साल पहले मैंने कहा था कि चार चरणों में ऐसा करें, लेकिन आज कहता हूं कि तीन चरणों में ही उन्हें मार गिराएं। उन्होंने आगे कहा, सभी जानते हैं कि अल्लाहो अकबर शब्द अरबी भाषा में अल्लाह की महानता के लिए प्रयोग किया जाता है। लेकिन, पिछले कुछ समय में कई महाद्वीपों में देखा गया है कि आतंकवादी घटनाओं से पहले दहशतगर्द इसे बोलते आए हैं।❖ साभार: http://hindi.news18@.com

भारतीयों ने तैयार की ओस से जल संचयन की तकनीक

अक्सर सुबह हम पत्तियों, घास व अन्य झुकावदार सतहों पर ओस की बूंदें देखते हैं। क्या कभी हमने यह सोचा कि ओस की ये बूंदें पानी का स्त्रोत भी हो सकती हैं। भारतीय वैज्ञानिकों के दल ने फ्रांस के विशेषज्ञों के साथ मिलकर ऐसी तकनीक विकसित कर ली है, जिससे ओस या वातावरण की नमी का संचय कर उसे पीने के पानी के रूप में प्रयोग किया जा सकेगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि गुजरात के कच्छ जैसे क्षेत्र जहां पानी की कमी रहती है, यह तकनीक प्रभावशाली और किफायती साबित होगी। वातावरण की नमी से जल संचय करने वाला भारत का पहला पेयजल उत्पादन संयंत्र कच्छ के कोठार गांव में लगाया गया है। इसकी क्षमता रोजाना औसतन 500 लीटर पानी बनाने की है। यह प्लांट हर वर्ष करीब डेढ़ लाख लीटर साफ पानी तैयार कर सकता है। एक लीटर पानी में 50 पैसे की लागत आती है। ❖

यूरोपीय देशों में बढ़ रहा संस्कृत का मान

भारत में जहां लगातार संस्कृत शिक्षा की उपेक्षा हो रही है। वर्तमान सरकार ने पिछले तीन वर्षों में काफी कुछ प्रयास किए हैं, परन्तु संस्कृत को लेकर जो 'नकारात्मक छवि' गढ़ दी गई है और कॉन्वेंट संस्कृति की अंग्रेजी शिक्षा ने गांव-गांव में अपने पैर पसारे हैं, उसके कारण संस्कृत का माहौल विद्यालय स्तर से ही खराब बना हुआ है। उधर यूरोप के प्रमुख देश जर्मनी में पिछले कुछ वर्षों से संस्कृत को लेकर जो रूचि उत्पन्न होनी शुरू हुई थी, वह अब लगभग सच्चाई में परिवर्तित हो चुकी है। सरलता से विश्वास नहीं होता, परन्तु यही सच है कि वर्तमान में जर्मनी के 14 विश्वविद्यालयों में संस्कृत और भारतीय विद्याओं पर न केवल पढ़ाई चल रही है, बल्कि इसके लिए बाकायदा अलग से विभाग गठित किए गए हैं। इसी प्रकार ब्रिटेन के चार विश्वविद्यालय संस्कृत की पढ़ाई जारी रखे हुए हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ हेडेलबर्ग के प्रोफेसर अक्सेल माइकल्स बताते हैं कि, जब 15 वर्ष पहले हमने संस्कृत विभाग शुरू किया था, तो दो-तीन वर्षों में ही उसे बंद करने के बाद में सोचने लगे थे। जबकि आज स्थिति यह है कि संस्कृत की पढ़ाई करने के इच्छुक यूरोपीय देशों से हमें इतने आवेदन मिल रहे हैं कि हमें उन्हें मना करना पड़ रहा है कि स्थान खाली नहीं है! अभी तक 34 देशों के 256 छात्र संस्कृत का कोर्स कर रहे हैं और यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है। ❖ **साभार: विश्वदर्पन**

चीन और जापान में भी गणेश महोत्सव की

भारतीय उत्सवों का आकर्षण विदेशों में भी बढ़ता जा रहा है। पहले जहां विदेशों में होली और दीवाली की धूम मची रहती वहीं इसी क्रम में अब गणपति उत्सव की धूम भी विदेशों में भी मची हुई है। चीन और जापान में गणेश महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। विघ्न विनाशक की स्थापना के लिए श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह नजर आया। जगह-जगह गणपति बप्पा की शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में अबीर गुलाल के साथ गणपति के आगमन की खुशी में विदेशी श्रद्धालु जमकर झूमे। ❖

मदरसे में भगवा ड्रेस, राष्ट्रगान और वंदेमातरम्

एक ओर जहां वंदेमातरम् बोलने को लेकर देशभर में बहस छिड़ी है, वहीं उत्तर प्रदेश के अंबेडकरनगर जिले के एक मदरसे में सामाजिक सदभाव बुलंद हो रहा है। यहां न सिर्फ बच्चे वंदेमातरम, भारत माता की जय बोलते हैं बल्कि उनके तन पर भगवा ड्रेस भी सजती है। जी हां, बात मदरसा फैजाने गरीब नवाज की है जहां शिक्षिकाओं की भी ड्रेस भगवा है। मुरादाबाद मुहल्ले में स्थित यह मदरसा कक्षा एक से पांच तक मान्यता प्राप्त है। 2014 में मदरसे के प्रबंधक बने बरकत अली ने अनोखी पहल की। उन्होंने पूरे स्कूल यानी बच्चों के साथ शिक्षिकाओं की पूरी ड्रेस ही भगवा कर दी। बच्चियों के ड्रेस में भगवा कुर्ती व सफेद शर्ट। इस पहल को हिंदू और मुस्लिम दोनों ने खुशी-खुशी स्वीकार किया और स्कूल भी आने लगे। बच्चों के घरवालों को भी कोई एतराज नहीं था। उनका मकसद सिर्फ बच्चों को बेहतर तालीम मिलने से ही था। फिर कार्यवाहक प्रधानाचार्य फातिमा बानो की देखरेख में सुबह नियमित प्रार्थना भी शुरू हो गई। प्रार्थना में 'हे मालिक तेरे बंदे हम...' गाकर बच्चे कक्षा की ओर प्रस्थान करते थे। इसके बाद राष्ट्रगान भी होने लगा और शिक्षकों के साथ नौनिहाल भारत माता की जय भी बोलने लगे। इतना ही नहीं, अब तो बाकायदा वंदेमातरम् भी मदरसे में नियमित रूप से गाया जाता है। मदरसे में विजया मैम, अंतिमा भी पढ़ाती हैं और बच्चों की देखरेख का जिम्मा पुष्पा देवी संभालती हैं यहां कुल 95 बच्चे हैं। ड्रेस प्रबंधक की ओर से निशुल्क दी जाती है।

हिंदू बच्चे भी पढ़ते हैं उर्दू

मदरसा में समीप के गांव जौहरडीह के गरीब परिवार के बच्चे पढ़ते हैं। अधिकांश बच्चे उर्दू की पढ़ाई भी करते हैं। वे अरबी नहीं पढ़ते हैं। इसे केवल मुस्लिम समाज के बच्चे ही पढ़ते हैं। प्रबंधक कहते हैं कि कोई रोक नहीं है लेकिन, बच्चों को बगैर किसी दबाव के जो अच्छा लगता है वही पढ़ाया जाता है।

घरों तक पहुंच रहा स्वच्छता का संदेश

पूरा मदरसा परिसर स्वच्छता का संदेश देता दिखाई पड़ता है। यहां नारा दिया गया है कि 'कूड़ा कूड़ेदान में डालें' इसी नारे का पालन हर कोई करता है। इस कारण पूरे परिसर में गंदगी तो दूर की बात एक कागज का टुकड़ा भी नजर नहीं आता है। प्रधानाचार्या फातिमा बानों बताती हैं कि स्वच्छता का हर पाठ बच्चों को पढ़ाया जाता है। ❖

100 बच्चों की पढ़ाई का पूरा खर्च उठा रहे हैं अचिन

रायपुर के अचिन बनर्जी पोल्ट्री फार्म का बिजनेस करते हैं। उनकी कंपनी के 9 पोल्टी फार्म हैं, जिनमें 700 कर्मचारी काम करते हैं। अचिन के माता-पिता का सपना था कि बेटा पढ़-लिखकर अधिकारी बने, पर अचिन का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। वह सिर्फ हायर सेकेंडरी तक की ही पढ़ाई कर सके। माता-पिता की मौत के बाद उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए अचिन अब जरूरतमंद बच्चों की मदद कर रहे हैं। वह कंपनी के कर्मचारियों के 100 से अधिक बच्चों की नर्सरी से लेकर हायर एजुकेशन तक की पढ़ाई का पूरा खर्च उठा रहे हैं।

बच्चों को स्कूल-कॉलेज आने-जाने में दिक्कत न हो, इसलिए अचिन दो बस भी चलवाते हैं। इन बच्चों को फीस के अलावा ड्रेस, कॉपी-किताब आदि भी अचिन की कंपनी फ्री में देती है। यही नहीं, पोल्ट्री फॉर्म में ही बच्चों के ट्यूशन के लिए अलग से क्लास रूम बनाए गए हैं।

इसके लिए दो शिक्षिकाएं भी रखी हैं। वहीं, कंपनी ने कर्मचारियों को मकान और चिकित्सा सुविधा भी दे रखी है। पवनपुत्र हाई स्कूल के प्रिंसिपल संतोष अग्रवाल कहते हैं कि बच्चे पढ़ाई का महत्व समझते हैं। उन्हें पता है कि महंगाई के दौर में निजी स्कूलों में पढ़ना कितना मुश्किल होता है। इसलिए

वे अचिन की कोशिश और मेहनत को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहते। अचिन की कंपनी में कार्यरत एल. पटनायक की बेटी अंजलि पटनायक इंजीनियर बन चुकी हैं। अचिन का कहना है कि मैं पढ़ाई के लिए मैं हमेशा माता-पिता की डांट सुनता रहता था। किसी तरह हायर सेकेंडरी तक की पढ़ाई पूरी की। कॉलेज में दाखिला लिया, पर बिजनेस में मन लगने के कारण पढ़ाई पूरी नहीं की। बिजनेस में सफल होने के बाद सोचा कि माता-पिता की इच्छा के अनुरूप मैंने तो ज्यादा पढ़ाई नहीं की, क्यूं न दूसरे बच्चों की शिक्षा का जरिया बनूं। यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसके बाद 2003-04 से लेकर अब तक यह सिलसिला चल रहा है। मैं खुद स्कूल का संचालन करने के बारे में सोच रहा हूं ताकि सभी बच्चे एक ही जगह पर पढ़ें। ❖

जन्म दर धीमी होने के बावजूद बढ़ती जनसंख्या विभिन्न समस्याओं का कारण

भारत विश्व में सबसे पहला देश था जिसने 1952 में परिवार नियोजन कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि पिछले कुछ दशकों में देश की जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई है। 1991 से 2000 में भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 21.54 थी, जो अब 2001-2011 में घटकर 17.64 फीसदी हो गई है। इसके बाद भी जनसंख्या जिस हिसाब से बढ़ रही है उससे 2026 तक 40 करोड़ अतिरिक्त लोगों का दबाव हमारे सीमित संसाधनों पर बढ़ जाएगा।

यही नहीं भारत जनसंख्या बढ़ने का प्रमुख कारण है बढ़ती जन्म दर और घटती मृत्यु दर। प्राकृतिक आपदाओं एवं महामारी पर काबू पाने और बेहतर चिकित्सीय सेवाओं की वजह से भारत में मृत्यु दर पहले से कम हो गई है। जन्म दर के बढ़ने की गति धीमी होने के बावजूद बढ़ती जनसंख्या विभिन्न समस्याओं का कारण बनी हुई है। आज बेरोजगारी, गरीबी और पर्यावरण पर दुष्प्रभाव जैसी समस्याओं से भारत जूझ रहा है तो इसका एक बड़ा कारण हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या है। जनसंख्या से जुड़ी समस्याओं और खतरों के बारे में जागरूकता फैलाना।

इस विशेष दिवस द्वारा लोगों को परिवार नियोजन के महत्व के साथ-साथ माता एवं बच्चे के स्वास्थ्य, लैंगिग समानता, गरीबी, शिक्षा, प्रजनन अधिकार आदि से परिचित कराया जाता है। इसके अलावा बाल विवाह से जुड़ी शारीरिक और मानसिक परेशानियों, यौन रोगों से बचाव जैसे विषयों पर भी जानकारी दी जाती है। विभिन्न रोगों से बचाव जैसे विषयों पर भी जानकारी दी जाती है। विभिन्न गैर सरकारी संगठन, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन सरकार के साथ मिलकर इस दिवस पर इन मुद्दों के समाधान निकालने का प्रयास करते हैं। यह समझने की जरूरत है कि जब महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और राजनीतिक भागीदारी द्वारा सशक्त किया जाएगा तभी वे अपने से जुड़ी प्रजनन संबंधित समस्याओं का भी समाधान कर पाएंगी। शोध ने यह साबित किया है कि जो महिलाएं सशक्त हैं वे प्रजनन संबंधित निर्णय सबसे अच्छी तरह से लेती हैं। यह समय की मांग है कि परिवार कल्याण जैसे कार्यक्रमों को घर-घर तक पहुंचाने का कार्य बढ़ा देना चाहिए।

विशेष तौर पर पिछड़े वर्ग की महिलाओं, आदिवासी महिलाओं एवं किशोरियों को आशा कर्मचारियों की मदद से परिवार नियोजन और यौन शिक्षा के बारे में जानकारी देने का काम प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। आने वाली पीढ़ी, चाहे वे लड़के हो या लड़कियां, सभी को शिक्षित बनाया जाना चाहिए। यह पहले से सिद्ध है कि जिन परिवारों की महिलाएं शिक्षित हैं उनके यहां बच्चों की संख्या कम है। अपने देश में एक बड़े वर्ग ने महिलाओं की प्रतिष्ठा उनके बेटे पैदा करने से जोड़ दी है। समाज में फैली इस भ्रांति को दूर करना जरूरी है, क्योंकि यह देखा जा रहा है कि जब तक महिलाएं बेटे को जन्म नहीं दे देतीं तब तक उन पर पति एवं परिवार के बाकि सदस्यों द्वारा बार-बार गर्भधारण करने के लिए दबाव बनाया जाता रहता है।

विश्व जनसंख्या दिवस 2017 की थीम है- ''परिवार नियोजन: लोगों का सशक्तीकरण और राष्ट्र का विकास।'' यह थीम इसकी ओर ध्यान दिलाती है कि सुरक्षित एवं शैक्षिक परिवार नियोजन हर एक नागरिक का अधिकार है और यही लोगों को सशक्त बनाएगा। भारत की आधी आबादी महिलाओं की है। अगर वे सशक्त हो जाएं तो देश जनसंख्या विस्फोट की समस्या से निकलकर प्रगति के पथ पर आसानी से आगे बढ़ जाएगा। यह समझना भी आवश्यक है कि पुरूष और महिलाएं, दोनों के सशक्तीकरण से ही एक उन्नत देश का निर्माण होगा।❖

साभार: दैनिक जागरण

सबके 'वीर' महावीर जी पंचतत्व में विलीन

सभी को अपने से लगने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री महावीर जी का भौतिक शरीर आज पंचतत्वों में विलीन हो गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री भैया जी जोशी, सहसरकार्यवाह श्री सुरेश सोनी, अखिल भारतीय प्रचार प्रम्मुख डॉ. मनमोहन वैद्य सहित अनेक संघ अधिकारियों व हजारों नागरिकों, परिजनों ने सजल नेत्रों से उन्हें विदाई दी।

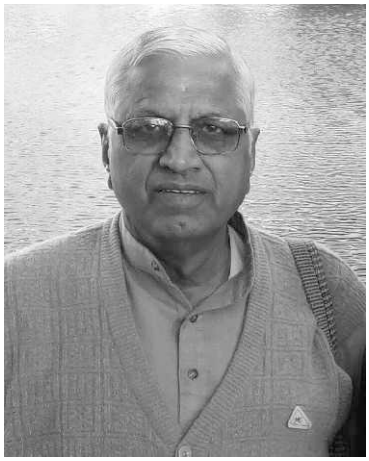

संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री महावीर का हृदयाघात के कारण 24 अक्टुबर को पीजीआई चंडीगढ़ में निधन हो गया था। स्व. महावीर जी का पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए संघ कार्यालय चंडीगढ़ में रखा गया, जहाँ हजारों स्वयंसेवकों ने उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धाँजलि अर्पित की। वरिष्ठ प्रचारक श्री रामेश्वर दास व प्रान्त प्रचारक श्री प्रमोद कुमार उनकी पार्थिव देह को लेकर उनके पैतृक निवास मानसा पहुंचे। मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वयंसेवकों ने अपने महावीर जी को श्रद्धासुमन भेंट किए। स्व. महावीर के भाई एडवोकेट सूरज छाबड़ा, श्री सुभाष छाबड़ा व अन्य परिजनों के आंखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे और महावीर जी की संघ व बचपन से जुड़ी यादों का स्मरण कर भाव विह्वल होते दिखे।

पूरे सम्मान के साथ उनकी पार्थिव देह को स्थानीय रामबाग ले जाया गया जहां दिवंगत महावीर जी के भतीजे श्री समीर छाबड़ा, श्री सौरभ छाबड़ा व श्री कुणाल छाबड़ा ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस मौके पर संघ के वरिष्ठ प्रचारक व उत्तर क्षेत्र के प्रचारक प्रमुख रामेश्वर दास, श्री प्रेम कुमार, बनवीर सिंह, श्री प्रेम गोयल, श्री किशोरकांत, श्री अशोक प्रभाकर, पंजाब प्रांत के संघचालक स. बृजभूषण सिंह बेदी, हिमाचल प्रदेश के प्रांत प्रचारक श्री संजीवन कुमार, सह प्रांत प्रचारक श्री संजय कुमार, कार्यवाह श्री किस्मत कुमार, सहित भारी संख्या में स्वयंसेवक, विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधि और नागरिक मौजूद थे।

24 अक्टूबर को स्वर्गवासी हुए महावीर जी का जन्म पंजाब के शहर बुढलाढा, जिला मानसा में एक सम्पन्न परिवार में 22 नवम्बर 1951 को हुआ था। इनके पिताजी का नाम दीवान चंद और माता का नाम कृष्णा देवी था। आपके दो भाई और तीन बहने हैं। महावीर जी बाल्यकाल से संघ के स्वयंसेवक थे। स्नातक बीएससी की पढ़ाई डीएम कॉलेज मोगा से पूरी करने के पश्चात् स्टैटिस्टिक्स में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से पूरी की। इनकी बुद्धि कुशाग्र व स्मृति विलक्षण थी। प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर उत्तीर्ण करने पश्चात् सन् 1972 में संघ के विस्तारक बनने का संकल्प लिया, जिसका अनुपालन उन्होंने जीवन पर्यन्त किया। वे परिश्रमी एवं उच्च जीवट के धनी थे। उनका चिंतन था कि व्यक्ति अनुशासित दिनचर्या से समय का उचित प्रबंधन कर समय को बाँध सकता है। वे कहते थे- 'सुबह उठण दा वाद्दा है, दिन छत्ती घंटे दा हो जाँदा है'। उन्होंने हिमाचल में संघ कार्य को प्रदेश के दूरस्थ स्थानों तक परिश्रम पूर्वक पहुँचाया। वे मंडी व शिमला में जिला प्रचारक, कांगड़ा के विभाग प्रचारक और फिर हिमगिरि प्रान्त (हिमाचल व जम्मू-कश्मीर) के सह-प्रान्त प्रचारक रहे। इसके बाद आपने पंजाब के प्रांत प्रचारक, उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख, अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख के नाते दायित्व निभाया। वर्तमान में आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकरिणी के सदस्य थे। 24 अक्टुबर 2017 को समाज को जगाने वाले महावीर जी को हृदयाघात ने चिरनिद्रा में सुला दिया।

जाते-जाते नेत्रदान कर वे दो लोगों के जीवन को रोशनमय कर गए। उच्च जीवट के धनी व प्रेरणादायी व्यक्तित्व वाले स्व0 महावीर जी को मातृवन्दना संस्थान विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ❖ **जारीकर्ता, विश्व संवाद केंद्र, जालंधर।**

किसानों से बीमा के नाम पर की जा रही है ठगी

-सुरेन्द्र ठाकुर

मैं आपको बीमा कंपनियों और सरकारी अधिकारियों की मिलीभक्त से बीमा स्कीमों के द्वारा के.सी.सी. होल्डर किसानों से की जा रही वंचना के बारे में बताना चाहूंगा। वैसे तो समय-समय पर इस बारे में समाचार पत्रों में छपता रहता है और हम भी अपने एन.आई.ओ. के माध्यम से सरकार के ध्यान में इस तथ्य से अवगत कराते रहे हैं। परन्तु आज तक किसी भी सरकारी अधिकारी द्वारा इस विषय पर गम्भीरता से विचार नहीं किया गया। सरकारी अधिकारी व बीमा कंपनीयां केवल के.सी.सी. होल्डर फल उत्पादकों की फसल का बीमा करवाने पर ही जोर देते हैं। इस बीमा स्कीम से फल उत्पादकों को आज तक कितना लाभ हुआ इस संबंध में सरकार ने अभी तक कोई भी सर्वेक्षण नहीं किया है। हर वर्ष फल उत्पादकों से मौसम आधारित बीमा स्कीम के अंतर्गत बैकों द्वारा किसानों की अनुमति व सहमति के बिना उनके खातों से बीमा राशि काटी जाती है और प्रदेश में काम कर रही सात आठ बीमा कंपनियों के खाते में लगा दी जाती है। मौसम की खराबी व ओलावृष्टि से होने वाले नुकसान के बावजूद बीमित किसानों को कभी भी उनके प्रीमियम के बराबर की राशि का क्लेम भी नहीं किया गया।

अगर किसान से 5000/- रूपए की राशि बीमा के रूप में काटी जाती है तो इतनी ही राशि सरकार द्वारा बीमा कंपनी को दी जाती है। जो बीमा कंपनी के खाते में जमा जा जाती है जो कंपनी द्वारा अनुचित व अनैतिक तरीके से की गई कमाई है। अमर उजाला में 15-10-2017 को छपी खबर से स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि बीमा कंपनियों की गिद्ध दृष्टि अब अन्य फसलों को अगाने वाले किसानों पर भी पड़ चुकी है। उन्होंने सरकारी अधिकारियों पर दबाव बनाकर फल उत्पादकों के अलावा दूसरी फसलों को उगाने वाले किसानों की फसलों का बीमा करने के आदेश दे दिए हैं। फल उत्पादकों की समस्याओं का सरकार ने कोई समाधान नहीं निकाला है। परन्तु तुगलकी फरमान निकाल कर बीमा कंपनियों की ज्यादतियों से बचे हुए किसानों पर भी फसल बीमा करवाने के आदेश जारी कर दिए हैं, जबकि इन बीमा स्कीमों के नियम व शर्तों में सुधार किए बिना किसानों को कोई भी लाभ नहीं होगा केवल बीमा कंपनियों की तिजारियां ही भरी जाएंग। बीमा कंपनियों की ज्यादमतियों से तंग आकर पीड़ित किसानों ने अब न्याय का दरवाजा खटखटाने का मन बना लिया है। इन बीमा स्कीमों के नियम व शर्तें षडयंत्र के तहत बीमा कंपनियों के हक में ही बनाए हैं।

उदाहरण के लिए पूरे प्रदेश के किसानों की फसलों को ओलावृष्टि से हर साल नुकसान होता है परन्तु ओलावृष्टि को बीमा पॉलिसी में शामिल ही नहीं किया गया है। इसके लिए किसानों को अलग से बीमा प्रीमियम का भुगतान करना पड़ता है जबकि ओलावृष्टि को केंद्र सरकार की अधिसूचना में शामिल किया गया है। इसी तरह बीमा स्कीमों के अन्य नियम, शर्तें व पैरामिटरज किसान विरोधी बनाए गए हैं इसलिए मौसमी आपदाओं के कारण फसलों को हुए नुकसान का क्लेम किसानों को नहीं मिलता। वित वर्ष केवल एक प्रखु बैंक एस.बी.आई. के 2014-15 के शिमला जिला के आंकड़े बताते हैं कि फसली बीमा के अन्तर्गत किसानों से 1करोड़ 62 लाख 52 हजार 947 रूपए का प्रीमियम बीमा कंपनियों ने प्राप्त किया। इतनी ही धनराशि प्रीमियम के तौर पर सरकार द्वारा दी गई।

इस प्रकार कुल 3 करोड़ 25 लाख 5 हजार 894 रूपए बीमा कंपनियों के खाते में गया जबकि इस अवधि में किसानों को बीमा कंपनियों द्वारा कुल मुआवजा केवल 20 लाख 15 हजार रूपए ही दिया गया। अभी तक की बीमा स्कीम में केवल फल उत्पादकों को ही लूटा जा रहा था परन्तु अब इन बीमा कंपनियों व अधिकारियों का अगला शिकार वो किसान होंगे जिन्होंने कृषि की अन्य फसलों के लिए बैंक से के.सी.सी. लिमिट ले रखी होगी। उनके खाते से अब बैंकों द्वारा किसानों की अनुमति व सहमति के बिना बीमा राशि काटी जाएगी। मेरे प्रदेश के सभी के.सी.सी. होल्डर किसानों, बागवानों से अनुरोध है कि वह अपनी के.सी.सी. पासबुकों का ध्यान लगाकर अवलोकन करें तथा आपकी अनुमति व सहमति के बगैर किसी भी प्रकार की राशि बैंकों द्वारा आपके खाते से नहीं काटी जानी चाहिए। ❖

मेहनत का महत्व

यह सामान्य जुमला है कि जो भाग्य में होगा वही मिलेगा। लेकिन सफलता भाग्य के भरोसे नहीं, बल्कि लगातार मेहनत करने से मिलती है। जितनी मेहनत करेंगे, उतने ही भाग्यशाली भी बनते जाएंगे। शिखर पर काफी खाली स्थान है, लेकिन बैठे-बैठे या सिर्फ सपने देखकर वहां नहीं पहुंचा जा सकता। सफलता की कहानी वही गढ़ते हैं, जिनमें ऐसा करने का माद्दा होता है, संकल्प होता है और जो अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हैं। यह जान लीजिए कि सफलता पाने के लिए निर्णय लेने पड़ते हैं, कठोर रास्तों पर संघर्ष करना पड़ता है। यह ऊंची पहाड़ी पर चढ़ने के समान है। जीवन की बुलंदियां तभी छू सकते हैं, जब कड़ी मेहनत करेंगे।

यदि हम देश-विदेश के महान व सुविख्यात लोगों की जीवनशैली का आकलन करें, तो यही पाएंगे कि जीवन में इस ऊंचाई या प्रसिद्धि के पीछे उनके द्वारा किए गए सतत् अभ्यास और परिश्रम का महत्वपूर्ण योगदान है। इतिहास में ऐसे एक नहीं कई उदाहरण हैं, जहां महापुरूषों ने कठिन परिश्रम की बदौलत संसार भर में छाप छोड़ी। एक बात तो स्पष्ट है, संसार में हर व्यक्ति जीतने की इच्छा रखता है, लेकिन जीतना इतना आसान नहीं हैं जीतने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। वह कीमत होती है, अपने जीवन का एक लंबा समय और उस लंबे समय में किया हुआ अथाह परिश्रम। ❖

कोंग्का दर्रे में आते हैं अंतरिक्षीय जीव

दुनिया के सबसे रहस्यमयी इलाकों में से एक है लद्दाख का दि कोंग्का ला दर्रा। इसके बारे में कहा जाता है कि यहां अंतरिक्षीय जीवों (यूएफओ) का गुप्त स्थल है। इसी कारण यहां पर रहस्यमयी जीवों (उड़न तश्तरियों) का दिखाई देना आम बात है। स्थानीय नागरिक भी इन बातों की पुष्टि करते हैं। और तो और, साल 2006 के जून में गूगल के सैटेलाइट ने भी इस जगह की कुछ ऐसी तस्वीरें ली थीं जिनमें रहस्यमयी यूएफओ दिखाई देने का जिक्र है। इस जगह पर जाना सबसे कठिन माना जाता है क्योंकि यह बहुत ही बर्फीला और दुर्गम क्षेत्र है। सबसे बड़ी बात यह है कि यह जगह भारत-चीन की विवादित जगह भी है। यहां पर दोनों नजर तो रखते हैं, लेकिन कोई पेट्रोलिंग नहीं करता। ऐसा दोनों देशों के बीच हुए समझौते के अनुसार किया जाता है।

यह क्षेत्र तो मैन्स लैंड घोषित किया गया है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग को लद्दाख कहते हैं जिस पर भारत का कब्जा है। उत्तर-पूर्वी भाग को अक्साइचिन कहते हैं जिस पर चीनी कब्जा है। इसी स्थान पर वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध भी हुआ था। भारत और चीन दोनों तरफ के लोग दावा करते हैं कि वे कई बार यहां पर इन जीवों को प्रकट होते व ओझल होते देख चुके हैं। लोग यहां पर अंडरग्राउंड यूएफओ बेस होने का दावा भी करते हैं। यहां से कैलाश पर्वत को जाते वक्त एक बार हिंदू श्रद्धालुओं को आकाश में अनोखा प्रकाश भी दिखा था। अगस्त 2012 में आईटीबीपी ने भी इन जीवों को देखने का दावा किया। वर्ष 2004 में भू-वैज्ञानिकों के एक दल ने मानव जैसी आकृति का चार फुट लंबा एक रोबोट निकटता से देखने का दावा किया। इस रोबोट ने पहले धरती पर विचरण किया और बाद में यह आकाश में ओझल हो गया। ❖ **साभार: दैनिक भास्कर**

प्रश्नोत्तरी

1. किन दो राज्यों में आगामी विधानसभा चुनावों की घोषणा हुई है?
2. हिमाचल प्रदेश विधानसभा में कितने विधायक चुनकर आते हैं?
3. पृथ्वी के तल से तुल्यकाली उपग्रह की उँचाई लगभग कितनी है?
4. नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाला प्रथम भारतीय व्यक्ति कौन था?
5. किस क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार दिया जाता है?
6. प्रिंटर, कीबोर्ड और मॉडेम जैसी बाहरी डिवाइसें क्या कहलाती हैं?
7. माउस के दो मानक बटनों के बीच स्थित व्हील का क्या प्रयोग होता है?
8. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब की गई थी?
9. भारतीय विज्ञान संस्थान कहां है?
10. वर्तमान में हॉकी का एशिया कप किस देश ने जीता?

चुटकुले

1. एक महिला ने जियो के कस्टमर केयर पे फोन करके गुस्साते हुए कहा? कि पिछले तीन घंटे से आपकी कम्पनी का इंटरनेट नहीं चल रहा है!
'बताइये मैं क्या करूँ'?
दिल को छू जाये कुछ ऐसा जवाब दिया कस्टमर केयर वाले ने.....
'बहनजी तब तक कुछ घर के काम ही कर लो!'

2. यदि आप अपने बैंक के सामने से निकलेंगे ओर आपका फेस TV में आ गया तो आपके खाते से 101 मुंह दिखाई के काट लिये जायेंगे।
-RBI

3. मोनू एक बड़ी कंपनी में इंटरव्यू देने गया,
बॉस बधाई हो, आप को सलेक्ट कर लिया गया है,
आपकी सैलरी पहले साल 6 लाख प्रतिवर्ष होगी,
फिर अगले साल बढाकर 10 लाख प्रतिवर्ष कर दी जाएगी,
मोनू बैग उठा के जाने लगा।
बॉस क्या हुआ?
मोनू सर फिर तो मैं अगले साल ही आऊंगा।

ना माफ़िया राज
ना भ्रष्टाचार

भाजपा

अब की बार
खुलेंगे खुशियों के द्वार

भारतीय जनता पार्टी, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल की पुकार भाजपा सरकार

कमल का बटन दबाएं, भाजपा को जिताएं

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।